

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

Year 17, Issue 67
July-Sept., 2020

वसुधा



VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

**EDITOR-PUBLISHER : Dr. Sneh Thakore - Awarded By The President Of India
Limka Book Record Holder**



सम्पादन व प्रकाशन

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
लिम्का बुक रिकॉर्ड होल्डर

वर्ष १७ - अंक ६७, जुलाई-सितम्बर २०२०

गीत नया गाता हूँ
भारत रत्न से विभूषित
माननीय अटल बिहारी वाजपेयी

टूटे हुए तारों से फूटे वासंती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ.

टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी?
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नहीं मानूँगा, रार नई ठानूँगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटता हूँ
गीत नया गाता हूँ.



वसुधा

सम्पादन व प्रकाशन : डॉ. स्नेह ठाकुर

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
१५ अगस्त को भरत पुत्रों का		
भारत विरोधी राष्ट्रों को सन्देश	डॉ. रवीश कुमार	५
भारतीय लोकतंत्र	प्रभात झा	६
सुपात्र	डॉ. स्नेह ठाकुर	९
वृन्दावन मेरा घर है	अवनीश सिंह चौहान	१२
राधा कृष्ण की प्रीत	सुशील शर्मा	१६
बराती, घराती और सैम	दिव्या माथुर	१९
बदल रंग तू	डॉ. गीता शर्मा	२५
मातृभाषा हिंदी राष्ट्रभाषा बने	डॉ. अंशुमाला	२६
अचल सुहागन वीर की	कादम्बरी मेहरा	२८
टिम्बुकटू में खोरोना	अनिल जोशी	२९
इन दिनों	किशन तिवारी	३१
परदेश में पतझड़	अरुणा सभरवाल	३२
नचिकेता	डॉ. नूतन पाण्डेय	३७
एक पाठ ऐसा भी	संजय भारद्वाज	३९
बाधाओं पर विचार	आचार्य धर्म शास्त्री	४१
मेरे शब्दों को	राहुल बरियारपुरी	४१
राष्ट्र देवो भवः	पूनम राजपुरोहित मानवताधर्मी	४२
गीत नया गाता हूँ	भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी	१अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक को आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00, भारत - रु. ६००.००

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>

e-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

जहाँ एक ओर चीन ने विश्व समेत भारत को न केवल कोरोना कोविड १९ की महामारी से ग्रसित किया वरन् वहीं वह भारत की सीमाओं पर भी बुरी नज़र उठा देश को धमकाने भी लगा, उस समय वह भारत की जनता का देश-प्रेम और उसके आदर्श प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी का देश के प्रति देश-भक्ति से ओत-प्रोत अनुराग, आदर, कर्तव्य-निष्ठा से परिपूर्ण पुरुषार्थ का अनुमान न लगा सका. अतः अपने इस कुकर्म पर चीन को प्रतिकार में मिली ऐसी भर्त्सना जिसका उसे स्वप्न में भी गुमान न था. चीन की भारत की सीमा पर अनाधिकार अतिक्रमण की चेष्टा के प्रत्युत्तर में मोदी जी ने सीमा पर तैनात सेना के मध्य जाकर कहा, “भारत एक ऐसा देश है जहाँ कृष्ण की बाँसुरी गूँजती है पर वहीं हमारे आराध्य कृष्ण समय पड़ने पर शत्रु के संहार हेतु अपना सुदर्शन चक्र उठाने में भी किंचित-मात्र संकोच नहीं करते”, चीन की रीढ़-विहीन महत्वाकांक्षा को ग्रहण लगा गया.

कोरोना कोविड १९ की इस महामारी में जहाँ लोगों का परस्पर मिलने पर प्रतिबन्ध है, और जिस कारण स्वयं ही सेमिनार होने पर प्रतिबन्ध लग गया है, वहीं इस प्रतिबन्ध प्रतिरोध से एक नया आयाम खुल गया है जिसे वेबिनार का नाम दिया गया है. इसमें सभी व्यक्ति अपने-अपने घरों में बैठकर जहाँ एक ओर अपने-अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं वहीं दूसरी ओर दूसरों के विचार सुन भी सकते हैं. मुझे भी कुछ वेबिनारों में आमंत्रित हो भाग लेने का सौभाग्य मिला है.

कोरोना कोविड १९ के इस दौर में साहित्यकारों का एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व बन जाता है कि वो जहाँ एक ओर समाज को इस बीमारी के अनेक पक्षों से अवगत कराएँ वहीं इस बीमारी से उत्पन्न हुई परिस्थितियों में नैराश्य को न फटकने दें. साहित्य लोकधर्मी हो और साथ ही साहित्यकार अपने साहित्य द्वारा आस का दीप जलाए रखें. सम्प्रेषणशीलता का निरन्तर ध्यान रखें और साथ ही साहित्यकारों की लेखनी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा बताया गया आत्मनिर्भरता का पाठ भी पढ़ाए. साहित्यकार ज्ञान, चरित्र और संस्कृति के संगम से – त्रिवेणी संगम से समाज को विभूषित करे. आत्मसम्मान और आत्मगरिमा को बनाए रखना है. बुनियादी शिक्षा ऐसी हो कि परिवेश के अनुसार ढलना नहीं है वरन् परिवेश को अपने अनुसार ढालना है. आत्मनिर्भरता कोई नारा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानव को प्रशिक्षित करने का मूल है. संस्कृति, साहित्य और समाज का अटूट सम्बन्ध है. सभ्यता समाज का शरीर होता है और संस्कृति उसकी आत्मा. आत्मनिर्भर भारत हेतु सामाजिक पुनर्रचना में साहित्यकार की भूमिका के अन्तर्गत जहाँ तक मेरी मान्यता है कि किसी भी युग में और किसी भी विषम दुर्दम्य परिस्थिति में –

साहित्यकार करता है मधुवन सृजन
सहता हुआ हर युग की त्रासदी के गम
सौंपता है पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रीति-प्यार वसीयत
अन्यथा होता यह कीड़े-मकौड़े का जीवन.
स्वयं साहित्यकार हूँ इसीलिए कहती हूँ कि सभी साहित्यकारों की यह पुकार है कि –
टकराना पड़े तो टकराएँगे दुश्मनों से
ताकत कम नहीं है हमारी बाँहों में
पर शक्ति आजमाने से पहले
दोस्ताना सुलह का तरीका आजमाएँगे
फिर भी न माने दुश्मन तो
उसकी हस्ती को मिटा देंगे

प्यार से झुकना कायरता समझी जाए तो
हम उसके छक्के छुड़ा देंगे
निराशा को पास नहीं फटकने देंगे
आशा का दीप जला उजाला करेंगे
खतरे तो आते ही हैं जीवन में
नहीं डरेंगे हम मुकाबला करेंगे

और इसी सन्दर्भ में -

हम करें राष्ट्र अभिवादन
हम करें राष्ट्र-भाषा आराधन
मैं जानती हूँ कि संविधान द्वारा हिंदी राष्ट्र-भाषा घोषित नहीं की गई है पर भारतीय जन-जन के हृदय में यह
राष्ट्र-भाषा के दर्जे पर विराजमान है -

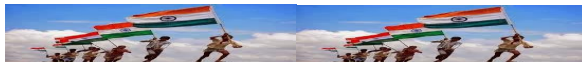
तन से, मन से, धन से
तन, मन, धन, जीवन से
हम करें राष्ट्र अभिवादन
हम करें राष्ट्र-भाषा आराधन.
हृदय से, वाणी से, निश्छल निर्मल मति से
श्रद्धा से नतमस्तक
हम करें राष्ट्र अभिवादन
हम करें राष्ट्र-भाषा आराधन.
खिलते शैशव से, उमगते यौवन से
प्रौढता की प्रज्ञा से, गौरव से
हम करें राष्ट्र अभिवादन
हम करें राष्ट्र-भाषा आराधन.
ले सीख इतिहास से, अतीत के गौरव से
सुखद भविष्य का निर्माण करें
हम करें राष्ट्र अभिवादन
हम करें राष्ट्र-भाषा आराधन.
बँधे कर्तव्य से, तिरंगे की शान से, सर ऊँचा उठा गर्व से
हम करें राष्ट्र अभिवादन
हम करें राष्ट्र-भाषा आराधन.

क्योंकि,

हम भारतवासी, हम भारतवंशी
क्रदमों से क्रदम मिला, कंधे से कन्धा मिला
चलते हैं हम ऐसे जब
दुश्मन के दिल हिलते हैं तब
रोकें चाहे आँधियाँ, ज़मी या आसमाँ हमें
पाना है लक्ष्य हमें हर हाल में
हिम्मत से चलें, धरती हिले क्रदमों तले

क्या दूरियाँ, क्या फासले, मंजिल लग जाएगी गले.
 चलना है हमें सुबह, शाम
 रुकना, झुकना नहीं हमारा काम
 अब तो यही रास्ता है अपना
 पहचान ले, यही सपना है अपना.
 आगे ही आगे बढ़ते जाना है
 विध्वंस-बादल बन संहार करना है
 शोला बन आग उगलना है
 दुश्मन के छक्के छुड़ाना है.
 आये हैं रण-प्रांगण में, लिए जान हथेली में
 मोड़ें कलाई मौत की, है हिम्मत हममें
 रण-बाँकुरे, हम पहुँचेंगे मंजिल पे
 हो जा होशियार, हम हैं आसमाँ की बुलंदी पे.
 हम अपनी सरहदों की लौह दीवार हैं
 दुश्मनों को हरदम खदेड़ने को तैयार है
 पछताओगे ताकत हमारी आजमा के तुम
 ऐ गीदड़, सियारों, न डालो हमारी माँ पर बुरी नज़र तुम.
 माँ के दूध का कर्ज चुकाना हमें आता है
 माँ के चरणों की कसम खा, सर काटना तुम्हारा हमें आता है
 भारत-माँ की संतान हम, तुम्हें समझाना हमें आता है
 अपनी माँ के चरणों में शीश तुम्हारा झुकाना हमें आता है.
 पुरुषों का शौर्य, बन लहू बहता हमारी रगों में
 झुकता नहीं यह शीश कभी किसी के आगे
 हम भारतवासी हैं, राणा प्रताप, वीर छत्रपति शिवा जी
 हर नारी यहाँ की है, रण-बाँकुरी झाँसी रानी लक्ष्मी बाई.
 भरा पड़ा है इतिहास हमारा वीर प्रतापों से
 हम हैं गर कोमल सुमन-से, तो सशक्त लौह-तार से
 तोड़ देंगे दुश्मन की ग्रीवा कमल-नाल-सी, फोड़ देंगे कपाल उसका
 हम हैं दोस्तों के दोस्त, पर बरपाते दुश्मनों पर कहर बड़ा.
 ऐ आक्रमणकारियों! भाग जाओ दुम दबा के यहाँ से
 क्यों शेर की माँद में आते हो जान-बूझ के!
 माँ की सुरक्षा का भार निभाना जानते हैं हम सभी
 जन-जन भारत का चने चबवायेगा तुम्हें हर क्षण ही.
 हम भारतवासी, हम भारतवंशी
 कदमों से कदम मिला, कंधे से कंधा मिला
 चलते हैं हम ऐसे जब, दुश्मन के दिल हिलते हैं तब
 जय हिन्द, जय भारती.

सस्नेह, स्नेह ठाकुर





१५ अगस्त को
भरत-पुत्रों का
भारत विरोधी राष्ट्रों को सन्देश

डॉ. रवीश कुमार

दुनिया तुम्हारी प्रशंसा करे यह सम्भव है,
हम तुम्हारी प्रशंसा करें, असम्भव है.
विनम्रता से सर झुका कर चलेंगे मगर,
स्वाभिमान बेच कर जिन्दा रहें, असम्भव है.
जीवन दायिनी पतित-पावनी माँ गंगा,
इस पावन नीर को अमृत न कहें, असम्भव है.
देश का सिरमौर साक्षात् देव पर्वत राज है,
हिमालय का शीश कोई झुका सके, असम्भव है.
धरती पर सबसे पवित्र मेरे देश की माटी,
माटी का कण भी दुश्मन छू सके, असम्भव है.
कच्छ से कामरूप, कश्मीर से कन्याकुमारी,
अखण्ड राष्ट्र को कोई भेद सके, असम्भव है.
शोणित धार बहा देंगे, महाप्रलय मचा देंगे,
भारत माँ का अपमान कोई कर सके, असम्भव है.
मेरे देश तन समर्पित, मन समर्पित, जीवन समर्पित,
अन्तिम साँस तक वन्दे मातरम् न कहें, असम्भव है.



भारतीय लोकतंत्र

प्रभात झा

(भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व राज्य सभा सांसद)

कोरोना महामारी का सामना करते हुए हमें ५० दिन से अधिक हो गए हैं। मानवता की सेवा में व्यक्ति, परिवार, समाज, संस्था सभी अपने-अपने स्तर से लगे हुए हैं। मनुष्य होने के नाते सोचना हमारी स्वाभाविक प्रकृति है। मैं भी सोचता रहा हूँ। संकट की इस घड़ी में, आज जब मैं भारतीय लोकतंत्र के बारे में सोचता हूँ तो सहसा मेरे मन में आता है कि देश में विपक्ष की क्या स्थिति हो गई है! ऐसा इसलिए क्योंकि लोकतंत्र की सफलता के लिए विपक्ष की सबलता भी जरूरी है। पिछले वर्षों में विपक्षी दलों की स्थिति का जो सच सामने आया है, वह चिंताजनक है। आज विपक्ष का जो रवैया है, लोकतंत्र के लिए स्वस्थ नहीं है। एक तरफ जहाँ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार देश की जनता की सुरक्षा और सेवा के लिए मोर्चा सँभाली हुई है, वहीं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के नेतृत्व में पार्टी का संगठन लाखों-करोड़ों कार्यकर्ताओं की बदौलत जन-जन तक पहुँच रहा है। सरकार और संगठन के समन्वय से कोरोना के खिलाफ जो युद्ध लड़ी जा रही है, पूरा विश्व इसकी प्रशंसा कर रहा है। लोकतंत्र में दल की संगठनात्मक मजबूती जरूरी है, जो कार्यकर्ताओं से बनता है रिश्तेदारों से नहीं। यह मैं इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मैं भारतीय जनता पार्टी का सदस्य हूँ, बल्कि इसलिए कि मैं भारतीय लोकतंत्र के बारे में सोच रहा हूँ। संकट की इस घड़ी में पूरा देश पक्ष और विपक्ष की भूमिका के बारे में सोच रहा है।

देश में आज ८ राष्ट्रीय, ५३ क्षेत्रीय और २०४४ गैर मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल हैं। ये ८ राष्ट्रीय राजनीतिक दल हैं: भारतीय जनता पार्टी(१९८०); भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस(१८८५); भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी(१९२५); मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी(१९६४); बहुजन समाज पार्टी(१९८४); तृणमूल कांग्रेस पार्टी(१९९८); और नेशनल पीपल्स पार्टी(२०१३)। प्रमुख क्षेत्रीय दल हैं : द्रविड़ मुनेत्र कडगम(१९४९), शिव सेना (१९६६), झारखंड मुक्ति मोर्चा(१९७२), समाजवादी पार्टी(१९९२), राष्ट्रीय जनता दल(१९९७)। कोरोना माहामारी के संकट की इस घड़ी में ये राजनीतिक दल कहाँ हैं? क्या इन राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की नजरों में लोकतंत्र का मतलब केवल चुनाव लड़ना और सत्ता में आना है?

१८८५ से लेकर २०२० तक के लगभग १३५ वर्षों तक के इतिहास में कांग्रेस की भूमिका को दो भागों में देखा जाना चाहिए। आज के कांग्रेसी कहते नहीं थकते कि कांग्रेस १०० वर्ष से अधिक पुरानी पार्टी है। कांग्रेस ने देश को आजादी दिलाई। उन्हें यह समझना होगा कि अँग्रेजों से स्वतंत्रता मिलने के बाद महात्मा गाँधी ने क्यों कांग्रेस को भंग करने की बात कही थी। मोती लाल नेहरू से लेकर जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी, सोनिया गाँधी, राहुल गाँधी और प्रियंका वाड्रा तक कांग्रेस पार्टी को अगर देखा जाए तो किसी भारतीय के लिए समझना यह कठिन नहीं है कि कांग्रेस एक वंश की पार्टी है, देश की जनता से अधिक इन्हें अपने परिवार और कुनबे की चिंता है। यही कारण है कि छह दशक तक सत्ता में रहे वाली कांग्रेस आज देश की जनता की नजरों में अविश्वसनीय हो गई है। २०१९ के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिले अभूतपूर्व जनसमर्थन से व्यथित राहुल गाँधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देते हुए कहा था कि गाँधी परिवार का कोई अध्यक्ष अब कांग्रेस अध्यक्ष नहीं बनेगा। कुछ दिनों बाद ही सोनिया गाँधी पुनः कांग्रेस अध्यक्ष बनीं।

कथनी और करनी में अंतर से विश्वसनीयता घटती है। राजनीतिक दल आत्मीयता से बनता है, संगठन ढाँचा से बनता है, व्यवस्था से बनता है। काँग्रेस में इसका अभाव है। ३० सालों से काँग्रेस में संगठन का चुनाव तक नहीं हुआ है। जिस काँग्रेस ने छह दशक तक देश में शासन किया, उसने केवल गाँधी परिवार की चिंता की, उनके एजेंडा में न कभी संगठन रहा, न कभी कार्यकर्ता, न कभी भारत रहा न कभी भारत की जनता। कुछ अपवाद को छोड़ दें तो, व्यक्ति, वंश और परिवार आधारित सभी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनैतिक दलों की स्थिति यही रही है, चाहे बहुजन समाजवादी पार्टी हो, राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी हो, तृणमूल काँग्रेस पार्टी हो, समाजवादी पार्टी हो, राष्ट्रीय जनता दल हो, द्रविड़ मुनेत्र कडगम हो या कोई अन्यान्य दल। यही कारण है कि ये सभी दल आज हाशिये पर हैं। जहाँ तक कम्युनिस्टों का सवाल है, उन्हें तो भारतीय राष्ट्र की अवधारणा से ही परहेज है। यही कारण है कि देश में कम्युनिस्टों के सभी गढ़ ढह गए हैं, चाहे पश्चिम बंगाल हो या त्रिपुरा। केवल केरल में बचा हुआ है।

संक्रमण के इस कठिन परीक्षा की घड़ी में, भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व और संगठन ने जो कर दिखाया है, उस पर हमारा ध्यान जाना स्वाभाविक है। पार्टी नेतृत्व ने देश के कोने-कोने में स्थित कार्यकर्ताओं को मानवता की सेवा में स्वयं को समर्पित करने के लिए जागृति पैदा की है। भारतीय जनता पार्टी के प्रति लोगों में अलग भाव पैदा हुआ है। पार्टी जनपरीक्षा में डिस्टिंक्शन अर्थात् विशेष अंक के साथ उत्तीर्ण हुई है, वहीं शेष राजनीतिक दल ग्रेस अंक भी पाने में असफल हुए हैं। इस सफलता के पीछे तपस्वी नेताओं की श्रृंखला का नैतिक समर्थन है जो निश्चय ही मेरुदंड के रूप में कार्य करता है। अगर भारतीय जनता पार्टी भी अन्य राजनीतिक पार्टियों की तरह वंश, परिवार, व्यक्ति आधारित पार्टी होती, तो कोरोना महामारी संकट के इस काल में क्या होता?

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना ६ अप्रैल १९८० को हुई थी, लेकिन २१ अक्टूबर १९५१ को भारतीय जनसंघ की स्थापना के साथ ही इसकी यात्रा आरम्भ हो गई थी। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में वरिष्ठ मंत्री थे, जो सरदार पटेल के विचार और नीति से साम्यता रखते थे लेकिन जवाहर लाल नेहरू की नीति को राष्ट्र की मूल प्रकृति के विपरीत मानते थे। नेहरू-लियाकत समझौते के विरोध में उन्होंने नेहरू मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया और राजनीतिक दल बनाने का निश्चय किया। लेकिन जवाहरलाल नेहरू और शेख अब्दुल्ला के अधिनायकवादी रवैये के कारण डॉ. मुखर्जी को कश्मीर की जेल में डाल दिया गया, जहाँ उनकी रहस्यपूर्ण स्थिति में २३ जून १९५३ को मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु आज भी रहस्य बनी हुई है। उनकी मृत्यु के पश्चात् जनसंघ को सशक्त बनाने का कार्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय के कंधों पर आया। भारत-चीन युद्ध में भी भारतीय जनसंघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर नेहरू की नीतियों का डटकर विरोध किया। जनवरी १९५४ के बम्बई अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय ने अपने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा था, 'लोकतंत्र की सफलता के लिए हमें जनता को योग्य शिक्षा देनी होगी। एक हजार साल की गुलामी ने हमारे दृष्टिकोण को बिगाड़ दिया है। अँग्रेजी शिक्षा ने असत्य जीवन मूल्यों की स्थापना कर दी है जिसे दूर करना है। अपने लक्ष्य पर दृष्टि केंद्रित कर, आत्मविश्वास और निष्ठा के साथ हम आगे बढ़ें।'

१९६७ में पहली बार भारतीय राजनीति पर लम्बे समय से बरकरार काँग्रेस का एकाधिकार टूटा, कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में काँग्रेस सत्ता से बाहर हुई और संयुक्त सरकारों में जनसंघ भी सहभागी बना। जून १९७५ में विपक्ष की आवाज को दबाने के लिए इंदिरा गाँधी ने देश में आपातकाल लगाया। राष्ट्रहित में १

मई, १९७७ को भारतीय जनसंघ ने अपना विलय जनता पार्टी में कर दिया। उस वर्ष हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस हार गई। केंद्र में पहली बार गैर-कांग्रेसी व जनता पार्टी की सरकार बनी। लेकिन जनता पार्टी का प्रयोग अधिक दिनों तक नहीं चल पाया। जनसंघ से जनता पार्टी में आये सदस्यों को अलग-थलग करने के लिए दोहरी-सदस्यता का मामला उठाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बंध रखने पर आपत्तियाँ उठायी जाने लगीं। यह कहा गया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सदस्य रहते जनता पार्टी के सदस्य नहीं हो सकते। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमारी मातृसंस्था है इसे हम नहीं छोड़ सकते। जनता पार्टी से अलग होकर ६ अप्रैल, १९८० को एक नये संगठन की घोषणा की गई। भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। अटल बिहारी वाजपेयी पार्टी के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

भले ही जनसंघ ने अपना दीया बुझा दिया पर धीरे-धीरे कमल खिलता गया। भारतीय जनता पार्टी ने साबित किया कि संगठन की ताकत क्या होती है। २ लोकसभा सीटों वाली पार्टी आज ३०३ सीटों के साथ केंद्र में दूसरी बार पूर्ण बहुमत के साथ सरकार चला रही है। संगठन की ताकत के बल पर ही आडवाणी जी ने सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा की। भले ही बिहार के समस्तीपुर में लालू यादव ने रथ के पहिया को रोक लिया, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के संगठन का पहिया नहीं रुका। पहली बार केंद्र में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में सरकार १९९६ में बनी थी, अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने थे। बाद में दो बार और १९९८ और १९९९ में वे प्रधानमंत्री बने।

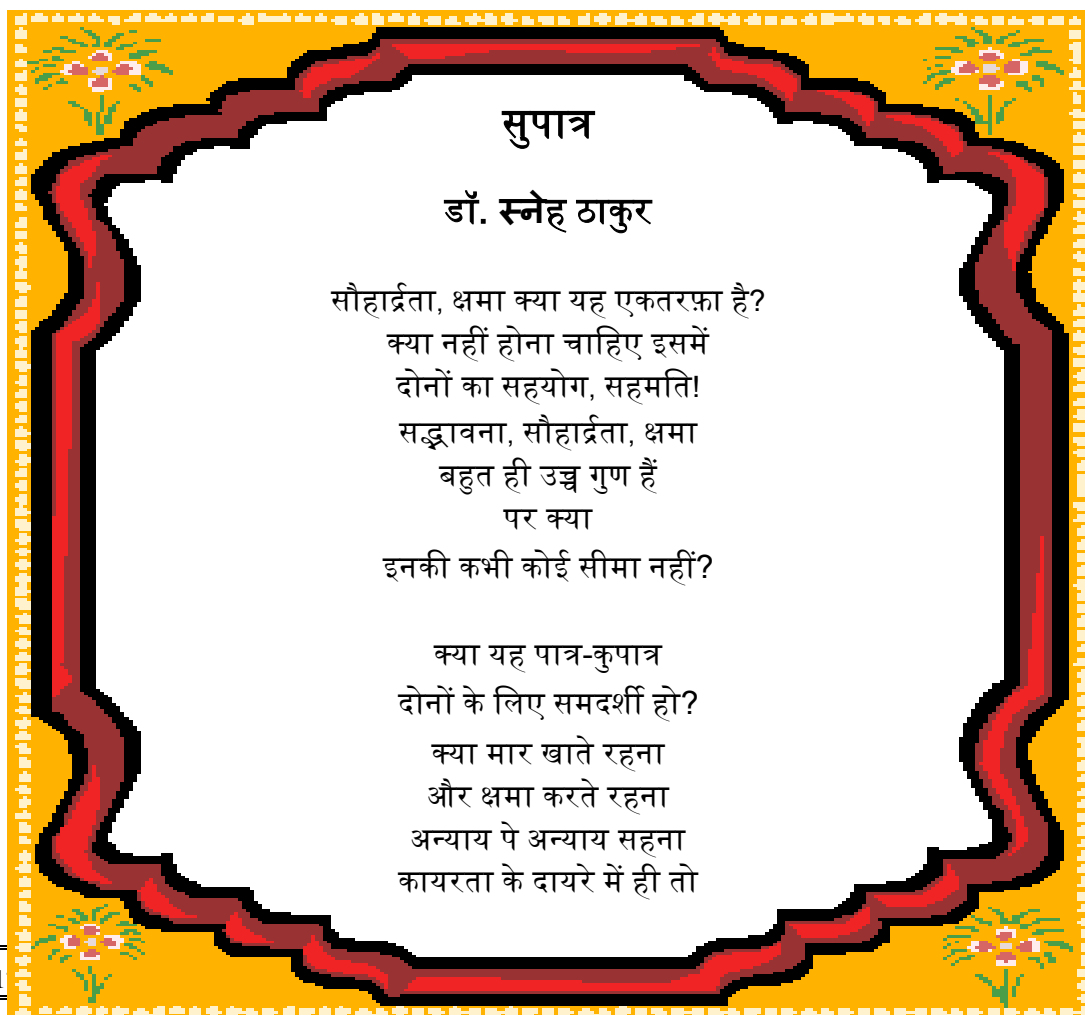
भारतीय लोकतंत्र में आम तौर पर राजनैतिक दलों में देखा गया है कि लोगों के लिए राजनीतिक मोह से बाहर आना मुश्किल होता है। इस मामले में अटल जी ने जो मिसाल प्रस्तुत किया, अन्यत्र दुर्लभ है। जब वे बीमार रहने लगे तो उन्होंने यह कहते हुए कार्य छोड़ दिया कि 'मैं बीमार हूँ, पार्टी को बीमार नहीं होने दूंगा।' उन आदर्शों का फल ही है कि १० सालों तक विपक्ष में रहने के बाद २०१४ में भारतीय जनता पार्टी को पहली बार लोकसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत मिला और नरेंद्र मोदी के रूप में एक ऐसा प्रधानमंत्री मिला जिन्होंने देश की दिशा और दशा बदल दी। जहाँ तक संगठन का प्रश्न है अमित शाह के रूप में भारतीय जनता पार्टी को एक ऐसा राष्ट्रीय अध्यक्ष मिला जिन्होंने लगभग ११ करोड़ की सदस्यता के साथ विश्व का सबसे बड़ा राजनैतिक दल बन गया। कार्यकर्ता, कार्यक्रम, कार्यकारिणी, कोष और कार्यालय के मूलमंत्र के साथ उनके नेतृत्व में सामूहिकता के साथ पार्टी ने युगांतकारी कदम आगे बढ़ाया।

सरकार और संगठन के समन्वय से अन्त्योदय, सुशासन, विकास एवं समृद्धि के रास्ते पर देश तेजी से आगे बढ़ने लगा। जनविश्वास २०१९ में प्रतिफलित हुआ, नरेन्द्र मोदी पहले से अधिक बहुमत के साथ देश के पुनः प्रधानमंत्री बने। जगत प्रकाश नड्डा अभी नए-नए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं। लेकिन उनके नेतृत्व में पार्टी के १७ करोड़ कार्यकर्ताओं ने कोरोना महामारी से महायुद्ध के इस दौर में साबित किया है कि इस महायुद्ध में सरकार के साथ-साथ राजनीतिक दल का संगठन भी कदम से कदम मिलाकर लड़ाई लड़ सकता है। कार्यकर्ता की ताकत के बल पर विषम से विषम परिस्थिति से देश को बचाया जा सकता है। यही सात्विक और आध्यात्मिक संगठन शक्ति है।

इतिहास पर नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि लगभग सभी राजनैतिक दलों में टूट और बिखराव हुआ। प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस भी कई बार टूटी, नई पार्टियाँ बनीं। कांग्रेस कमजोर होती गई, और आज तो कांग्रेस की हैसियत कई क्षेत्रीय दलों से भी कम है। भारतीय जनता पार्टी में वैसा टूट और बिखराव कभी नहीं हुआ। असल में भारतीय जनता पार्टी एक आंदोलन है, और इस आंदोलन की सफलता के पीछे इसका संगठन है,

विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता है और अटल-आडवाणी जी जैसे लोगों का नैतिक बल। धारा ३७० की समाप्ति हो, तीन तलाक से मुस्लिम महिलाओं की मुक्ति हो, राम मंदिर का निर्माण हो, गरीब-किसान-मजदूर की सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा हो, भारतीय जनता पार्टी ने सरकार में आने पर साबित किया है कि देश की जनता के बीच जो घोषणापत्र लेकर जाती है पूरा करती है। देश की जनता के साथ छल नहीं करती। सीमा की रक्षा हो, आतंकवाद-नक्सलवाद का खात्मा हो, या कोरोना महामारी रूपी संकट से निपटना हो, सरकार और संगठन के समन्वय से पार्टी हर युद्ध ईमानदारी से लड़ती है।

लक्ष्य, कार्यदृष्टि और आत्मीयता मूलतः संगठन का आधार होता है। भारतीय जनता पार्टी के लिए यह मूलाधार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब लॉकडाउन के कारण उत्पन्न समस्या को लेकर देश की जनता से माफी माँगते हैं, उस समय यह मानवता और आत्मीयता झलकता है। यह उस समय भी झलकता है जब वे एक कार्यकर्ता के नाते भारतीय जनता पार्टी के ४०वें स्थापना दिवस पर कार्यकर्ता को कोरोना योद्धा के रूप में कार्य करने को कहते हैं। पर सहसा मेरे मन में आता है कि अन्य राजनैतिक दलों को क्या हो गया है? विपक्ष को क्या हो गया है? उनकी मानवता और आत्मीयता को क्या हो गया है? देश के लोकतंत्र को तो राजनैतिक दलों को ही चलाना है। विपक्ष की मजबूती ही लोकतंत्र की मजबूती है। विपक्षी नेता के रूप में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं अटल बिहारी वाजपेयी जैसे विभूतियों को आज भी स्मरण किया जाता है। विपक्ष की भूमिका कल भी थी, आज भी है और आगे भी रहेगी। विपक्ष के गर्भ में सत्ता छुपी होती है। हमने विपक्ष में रहते हुए भी स्वीकार किया और आज भी स्वीकार करते हैं।



बँधे रहने की श्रेणी में नहीं आता?
 एक हाथ से ताली बजती नहीं
 दूसरा गाल सामने करने से
 बात बनती नहीं
 कहीं-न-कहीं
 सीमा तो बाँधनी पड़ेगी
 खलबला उठे थे द्वापर में
 कृष्ण भी.

आतंकों की स्मृतिपटल पर जड़ी
 स्मृतियाँ तो छोड़ ही दीजिए
 नानी दादी द्वारा सुनाई विभीषक चर्चाएँ
 तो दूर की बात
 ये तो हैं हाल ही की
 आँखों देखी विभीषिकाएँ
 सूख नहीं पाए धब्बे लहू के
 छिटके हुए शरीर पर.

न हुई अभी चीत्कारें शांत
 क्षत-विक्षत शरीरों की
 सूखे नहीं हैं
 खून के फव्वारे अभी
 अन्त्येष्टि क्रिया भी
 न कर पाए हम अभी
 जीवित रगों का खौलता खून
 ठंडा हुआ नहीं अभी
 कि तुम बात करने लगे
 सौहार्द्रता की!

हाँ, हम हिन्दू हैं
 सौहार्द्र, क्षमाशील, सद्भाव हैं
 पर बेवकूफ़, कायर नहीं
 हाथ मिलाने के लिए
 हम हरदम अग्रगणी हैं
 पर उन्हीं हाथों को
 जो पेशावर हत्यारे नहीं.

अंकवार करने से हमने
मना किया नहीं कभी
पर पीठ में छुरा भोंकने वालों की
पहचान है अभी
उनके कन्धों से कन्धा मिला कर
चलेंगे हम तभी
जब वो
क्षमाशीलता, सौहार्द्रता और सद्भावना का
कद्रदान हो स्वयं भी.



वृन्दावन मेरा घर है

अवनीश सिंह चौहान

वृन्दावन सो वन नहीं, नन्दगाँव सो गाँव।

बंशीवट सो वट नहीं, कृष्ण नाम सो नाँव।।

ब्रज का हृदय कहे जाने वाले वृन्दावन के प्राकृतिक सौंदर्य को व्यंजित करता जन-सामान्य में प्रचलित उपर्युक्त दोहा अपने आप ही बहुत कुछ कह दे रहा है। यह दोहा जहाँ नन्दगाँव, बंशीवट और कृष्ण-नाम की महत्ता पर प्रकाश डाल रहा है, वहीं श्री यमुना जी के तट पर विद्यमान श्री वृन्दावन के मनोरम वनों को भी सलीके से रेखांकित कर रहा है। ऐसे में जिज्ञासुओं के मन में प्रश्न उठ सकता है कि आखिर वृन्दावन में वन कहाँ से आ गये? भौगोलिक दृष्टि से यह प्रश्न स्वाभाविक भी है। परन्तु, कई बार स्वाभाविक भी अस्वाभाविक लगता है और अस्वाभाविक भी स्वाभाविक लगने लगता है। इसलिए वृन्दावन के निराले वनों के स्वरूप पर एक श्लोक भी देख लिया जाय - "वृन्दाया तुलस्या वनं वृन्दावनं" - अर्थात् जहाँ तुलसी के वन विशेष रूप से पाये जाते हैं, उसे वृन्दावन कहते हैं। यहाँ फिर एक प्रश्न कि अब तो तुलसी के वन वृन्दावन में कहाँ दिखाई पड़ते हैं? कुछ हद तक यह सच भी हो सकता है। किन्तु, आज भी वृन्दावन के तमाम घरों, आश्रमों, मंदिरों, खेतों-क्यारियों में प्रचुर मात्रा में तुलसी देखने को मिल जाएगी - "ॐ श्री तुलस्यै विद्महे। विष्णु प्रियायै धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।" शायद इसीलिये वृन्दावन के सद गृहस्थ, भक्त, संत, महंत, दिगंत तुलसी का प्रयोग सदैव श्री-ठाकुर-सेवा में करते हैं और वृन्दावन के बाहर से पधारे आस्थावान लोग भी वृन्दावन से तुलसी अपने साथ अपने घर ले जाते हैं। भक्त संत मीराबाई ने भी अपने एक पद में इस बात की पुष्टि की है -

“आली, म्हांने लागे वृन्दावन नीको।

घर-घर तुलसी, ठाकुर पूजा, दरसण गोविन्दजी को।

निरमल नीर बहत जमुना में, भोजन दूध-दही को।

रतन सिंघासन आप बिराजें, मुकट धर्यो तुलसी को॥

कुंजन कुंजन फिरति राधिका, सबद सुनन मुरली को।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको॥

निर्मल नीर, दूध-दही-माखन, कुंज-निकुंज, सबद-भजन, मुरली-मुकुट और तुलसी। घर-घर तुलसी और उसका अद्भुत सम्मोहन। इन तुलसी-वनो को विज्ञान और अध्यात्म के संगम के रूप में भी देखा जा सकता है। तुलसी के साथ यहाँ और भी कई प्रकार के पेड़-पौधे बहुतायत में देखने को मिल जाते हैं, जैसे - बंशीवट, कदम्ब, अशोक, नीम, आम, तमाल, करील, बबूल आदि। श्रीराधा-कृष्ण के प्रतिबिम्बों का दर्शन कराते ये भाँति-भाँति के पेड़-पौधे और उनके फल-फूल-लताएँ भावक के मन में हर्ष और उल्लास का संचार करते हैं। ऐसी मान्यता है कि जब लीलावतार श्रीकृष्ण और श्री राधारानी रासलीला करते हैं, तो ये तमाम पेड़-पौधे गोपियाँ बनकर उनके साथ नृत्य करने लगते हैं। भक्तजन यह सब जानते-समझते हैं और शायद इसीलिये वे श्रीधाम वृन्दावन की परिक्रमा करते समय मार्ग में स्थित इन तमाम पेड़-पौधों को प्रणाम करते हुए आगे बढ़ते हैं। यह जानकर आश्चर्य हो सकता है; परन्तु, ऐसे आश्चर्य तो वृन्दावन में होते ही रहते हैं - "अचरज नहिँ मानहिँ, जिनके विमल विचार" (कवि-कुल कमल बाबा तुलसीदास)।

सावन-भादों जैसी हरियाली और उत्सव जैसा परिवेश वृन्दावन के कण-कण को रसमय बना देता है। यह रस जितना प्रकृति में है, उससे कहीं अधिक यहाँ के प्रेमी भक्तों, संतों, महंतों में है। यह प्रेम का धाम है। अखंड भक्ति का धाम है। योगीराज श्रीकृष्ण और जगत-स्वामिनी श्रीराधारानी का धाम है। यही कारण है कि लाखों भक्तजन यहाँ पर खिंचे चले आते हैं और यहाँ होने वाली रासलीलाओं, भगवत्कथाओं, साधु-संगतों, हरिनाम संकीर्तन आदि में भाग लेकर रसमग्न होते हैं - "कैसे सजीलो सजो हिंडोरो/ रस रास रसीलो रसभीजो रसमग्न रसिक हियो" (स्वामी हरिदास)। वैष्णव भक्तों - स्वामी वल्लभाचार्य, स्वामी हरिदास, स्वामी हितहरिवंश, मलूक दास, काठिया बाबा, स्वामी ललितमोहनदास, उड़िया बाबा, भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, देवरहा बाबा, जगद्गुरु कृपालु जी आदि एवं संत कवियों - सूरदास, रसखान, मीराबाई आदि ने वृन्दावन के इस प्रकार के वैभव की बहुत ही सुन्दर व्यंजना की है। इससे सम्बंधित तमाम ग्रन्थ एवं पांडुलिपियाँ ब्रज कला, संस्कृति, साहित्य एवं इतिहास के संरक्षण व संपोषण हेतु समर्पित 'वृन्दावन शोध संस्थान' एवं 'ब्रज संस्कृति शोध संस्थान' (वृन्दावन) में देखी जा सकती हैं। इतना ही नहीं, कई पुराणों - हरिवंश पुराण, श्रीमद्भागवत् महापुराण, विष्णु पुराण आदि और अन्य साहित्यिक ग्रंथों में भी वृन्दावन की अक्षय कीर्ति का बखान किया गया है। श्रीमद्भागवत् महापुराण के अनुसार मथुरा नरेश कंस के अत्याचार से दुखी होकर नंद जी अपने घर-परिवार के लोगों को साथ लेकर गोकुल से वृन्दावन चले आये थे। रघुवंश काव्य में आदिकालीन महाकवि कालिदास ने इंदुमती-स्वयंवर के समय शूरसेनाधिपति सुषेण के माध्यम से वृन्दावन के मनोरम उद्यानों का उत्कृष्ट वर्णन किया है। महाकवि कालिदास के समय में ही नहीं, बल्कि आज से लगभग ५०-६० वर्ष पहले भी श्री वृन्दावन में मनोरम उद्यान, बाग-बगीचे एवं ऊँचे-नीचे टीले जहाँ-तहाँ खूब दिखायी पड़ते थे। समय बदला और आधुनिकतावाद और उपभोक्तावाद के इस दौर में वृन्दावन भी अछूता नहीं रहा - वहाँ भी अप्रत्याशित परिवर्तन हुए। समय एक बार फिर करवट ले रहा है और सद विप्र श्री चन्द्रलाल शर्मा (संस्थापक अध्यक्ष - ब्राह्मण सेवा संघ) जैसे श्रेष्ठ वृन्दावनवासी एकजुट होकर वृन्दावन में प्राकृतिक सौंदर्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

ब्रज के केन्द्र में स्थित वृन्दावन, जो कि मथुरा से १५ कि.मी. की दूरी पर है, ब्रज क्षेत्र का एक प्राचीन तीर्थ स्थल है। यह तीर्थ स्थल भगवान् श्रीकृष्ण की लीला-स्थली रहा है। यहाँ पर श्री कृष्ण और श्री राधारानी के कई सुन्दर मन्दिर हैं - विशेषकर श्री बाँके विहारी जी का मंदिर व राधावल्लभ लाल जी का मंदिर। इन मंदिरों के अतिरिक्त यहाँ श्री राधा दामोदर, श्री राधारमण, श्री राधा श्याम सुंदर, निधिवन (हरिदास का निवास कुंज), कालियादह, सेवाकुञ्ज, गोपीनाथ, श्री गोपेश्वर महादेव, पागलबाबा का मंदिर, रंगनाथ जी का मंदिर, श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, कात्यायनी पीठ, प्रेम मंदिर, श्री कृष्ण-बलराम मन्दिर (इस्कॉन टेम्पल), वैष्णो माता मंदिर, गोरेदाऊ जी मंदिर, चामुण्डा मंदिर आदि दर्शनीय हैं। इन ऐतिहासिक महत्व के मंदिरों के अलावा यहाँ कई भव्य आश्रम - अखण्डानंद सरस्वती आश्रम, आनन्द वृन्दावन आश्रम, उड़िया बाबा आश्रम, श्री हितहरिवंश आश्रम, श्रोतमुनि आश्रम, काठिया बाबा आश्रम, गीता आश्रम, टटिया धाम आश्रम, फोगला आश्रम, बाबा नीब करौरी आश्रम, बैरागी बाबा आश्रम, भक्ति आश्रम, भक्ति निकेतन, भागवत कृपा निकुंज, मानव सेवा संघ, रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, वात्सल्य ग्राम, वेदांत आश्रम, शरणागत आश्रम, सुदामा कुटी, हनुमान टेकरी आश्रम आदि एवं महत्वपूर्ण पीठ - कात्यायनी शक्ति पीठ, उमा शक्ति पीठ, मलूक पीठ आदि और सुव्यवस्थित गौशालाएँ - इस्कॉन

गोशाला, श्री कृष्ण गौशाला, श्री पंचायती गौशाला, श्रीपाद बाबा गोशाला, गोरेदाऊ जी गौशाला, मलूकपीठ गौशाला, वृन्दावन गौशाला, वात्सल्य ग्राम गौशाला आदि भी हैं। वैष्णव (माधव, वल्लभ, राधावल्लभ, निम्बार्क, रामानंदी, बैरागी, सखी, हरिदासी, गौड़ीय, गौड़ीय वैष्णव आदि) एवं वैदिक सम्प्रदायों के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्रिया-कलापों के लिए प्रसिद्ध वृन्दावन की शोभा इन मंदिरों के साथ श्री यमुना जी के तट पर विद्यमान घाटों - श्री वराह घाट, कालीयदमन घाट, सूर्य घाट, युगल घाट, श्रीबिहार घाट, श्रीअंधेर घाट, इमलीतला घाट, श्रृंगार घाट, श्रीगोविन्द घाट, चीर घाट, श्रीभ्रमर घाट, श्रीकेशी घाट, धीरसमीर घाट, श्रीराधाबाग घाट, श्रीपानी घाट, आदिबद्री घाट, श्रीराज घाट आदि से भी है। ये मंदिर और घाट वृन्दावन में आस्था और विश्वास के केंद्रों के रूप में पूजे जाते रहे हैं - "ऐसा तेरा सम्मोहन/ एक सुमन में बसा हुआ लगता है वृन्दावन/ ऐसा तेरा सम्मोहन" (श्री वीरेन्द्र आस्तिक)।

श्री चैतन्य महाप्रभु, श्री लोकनाथ, श्री भूगर्भ गोस्वामी, श्री सनातन गोस्वामी, श्री रूप गोस्वामी, श्री गोपालभट्ट गोस्वामी, श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी, श्री रघुनाथदास गोस्वामी, श्री जीव गोस्वामी आदि गौड़ीय वैष्णवाचार्यों की साधना-स्थली वृन्दावन में वृन्दावनवासियों का जीवन जीने का अपना ढंग है - न कोई दिखावा, न कोई छल-छद्म, न कोई अहंकार, न कोई डर-भय। वे सहज हैं, निर्मल हैं, निश्छल हैं, भगवत-भक्त हैं। उनके घर सामान्य और मोहल्ले छोटे-छोटे हैं। देखने लायक यह भी है कि उनके ज्यादातर मोहल्लों के नाम सनातन संस्कृति से जुड़े हुए हैं, जैसे - ज्ञानगुदड़ी, गोपीश्वर, बंशीवट, गोपीनाथबाग, गोपीनाथ बाज़ार, राधानिवास, केशीघाट, राधारमणघेरा, निधुवन, पाथरपुरा, गोपीनाथघेरा, नागरगोपाल, चीरघाट, मण्डी दरवाज़ा, सेवाकुंज, कुंजगली, व्यासघेरा, श्रृंगारवट, रासमण्डल, किशोरपुरा, धोबीवाली गली, रंगी लाल गली, अहीरपाड़ा, मदनमोहन जी का घेरा, बिहारी पुरा, अठखम्बा, गोविन्दबाग, लोईबाज़ार, रेतियाबाज़ार, बनखण्डी महादेव, छीपी गली, टट्टीया स्थान, रमण रेती, सरस्वती विहार, गौशाला नगर, हनुमान नगर, कैलाश नगर, गोधूलिपुरम आदि। किसी कवि ने वृन्दावन की महिमा का गुणगान करते हुए सच ही कहा है -

एक बार अयोध्या जाओ, दो बार द्वारिका, तीन बार जाके त्रिवेणी में नहाओगे।

चार बार चित्रकूट, नौ बार नासिक, बार-बार जाके बद्रीनाथ घूम आओगे॥

कोटि बार काशी, केदारनाथ रामेश्वर, गया-जगन्नाथ, चाहे जहाँ जाओगे।

होंगे प्रत्यक्ष जहाँ, दर्शन श्याम श्यामा के, वृन्दावन-सा कहीं आनन्द नहीं पाओगे॥

वृन्दावन की महिमा अनंत है - "धन वृन्दावन धाम है, धन वृन्दावन नाम। धन वृन्दावन रसिक जो, सुमिरै स्यामा स्यामा।" मन को पुलकित कर देने वाली यह पावन भूमि योगेश्वर श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं की अनुभूति कराने में सक्षम है - "उसका ठौर ठिकाना, उसकी/ रहन सहन के क्या कहने/ उसके आलिंगन में लगते हैं/ सारे मधुरस बहने/ देह बची ही नहीं/ आत्मा मगन लगी" (श्री रमाकांत)। शायद तभी जब कोई भावक वृन्दावन की धरती पर आता है, तो वह अनायास ही अनुभव करने लगता है कि उसका हृदय असीम आनंद से भर गया है और तब उसके मुख से 'राधे-राधे' महामंत्र स्वतः ही झरने लगता है। यहाँ मुझे श्री माहेश्वर तिवारी की पंक्तियाँ याद आ रही हैं - "मन का वृन्दावन हो जाना कितना अच्छा है/ धुला-धुला दर्पण हो जाना कितना अच्छा है।" इसी को वृन्दावनवासी सद-गृहस्थ-भक्त श्री चंद्रलाल शर्मा कुछ इस प्रकार से कहते हैं - "वृन्दावन मन-भावन जिसकी/ महिमा अद्भुत न्यारी है।/ गऊ, घाट, वट, वृक्ष, लताएँ, पावन यमुना प्यारी है।" वृन्दावन मन-

भावन हो, तो वृन्दावन का पानी अमृत लगने लगता है (जब यमुना जी प्रदूषित नहीं थीं, तब भक्त-श्रद्धालु गंगाजल की तरह ही यमुनाजल को अपने घर ले जाया करते थे) और वृन्दावन की माटी 'श्रीकृष्ण का माटी भोग' लगने लगता है। वृन्दावन रज, जिसे भक्तजन वर्षों से अपने माथे पर चन्दन की तरह लगाते रहे हैं और चुटकी भर रज को प्रसादरूप में लेते रहे हैं, की महिमा का मनोहारी वर्णन करते हुए कभी संत शिरोमणि सूरदास जी ने भी कहा था –

हम ना भई वृन्दावन रेणु।

तिन चरनन डोलत नंद नन्दन नित प्रति चरावत धेनु।

हम ते धन्य परम ये दुम वन बाल बच्छ अरु धेनु।

सूर सकल खेलत हँस बोलत संग मध्य पीवत धेनु॥

यहाँ भक्त-कवि सूरदास जी के वृन्दावन प्रेम से तुक-ताल मिलाते अपने एक गीत की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करने का मन हो रहा है - वृन्दावन की माटी चंदन/ माथ लगाते नर-नारी-जन।

फूल मनोहर वृक्ष-लताएँ,/ गऊ, घाट, यमुना का पानी/

परिकम्पा में रमण बिहारी/ रुनझुन-रुनझुन राधारानी/

वृन्दावन का नित अभिनंदन,/ प्रेम-मुदित करते तुलसी वन॥

यहाँ मेरे एक और गीत की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं - वृन्दावन तो वृन्दावन है,/ प्रेम-राग की रजधानी।

प्रेम यहाँ बसता राधा में/ मुरली मधुर मुरारी में/

प्रेम यहाँ अधरों की भाषा/ नयनों की लयकारी में/

प्रेम यहाँ रस-धार रसीली,/ मीठा यमुना का पानी॥

श्री धाम वृन्दावन से सम्बंधित एक पौराणिक कथा भी है। भगवान श्रीकृष्ण ने तीर्थराज प्रयाग को तीर्थों का राजा बना दिया। सभी तीर्थ तीर्थराज प्रयाग को कर देने लगे। किन्तु, वृन्दावन कभी कर देने नहीं पहुँचे। तीर्थराज प्रयाग ने श्रीकृष्ण से इसकी शिकायत की। श्रीकृष्ण ने तीर्थराज प्रयाग से कहा कि वृन्दावन मेरा घर है और भला कोई किसी को अपने घर का भी राजा बनाता है। तब तीर्थराज प्रयाग को खाली हाथ वापस लौटना पड़ा। एक स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण ने वृन्दावन को अपना श्रीविग्रह (देह) कहकर भी सम्बोधित किया है - "पंचयोजनमेवास्ति वनं मे देह रूपकम्।" इसलिए जो लोग इस वृन्दावन में वास करते हैं, उन पर निश्चय ही भगवान श्रीकृष्ण की अनुकम्पा हुई है। यह अनुकम्पा अद्भुत है, क्योंकि यह इस प्रकार से अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं पड़ती। लेकिन, भला इतने से काम कहाँ चलने वाला। ब्रज में रहना है तो राधे-राधे कहना है, यानी कि इस अनुकम्पा में ब्रज की महारानी श्री राधारानी की कृपा भी शामिल होनी चाहिए - "कृपयति यदि राधा, बाधिता शेष बाधा।" आनंदकंद घनश्याम एवं लाडली किशोरी जी की नित्य विहार लीला-स्थली श्री वृन्दावन धाम को मैं अकिंचन कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ - राधा मेरी स्वामिनी, मैं राधे को दास।

जनम-जनम मोहि दीजौ, वृन्दावन को वास॥



राधा कृष्ण की प्रीत

सुशील शर्मा

राधा - पल पल राह निहारती, आँखें तेरी ओर।

जब से बिछुड़े साँवरे, दुख का ओर न छोरा।

कृष्ण - पर्वत जैसी पीर है, हृदय बहुत अकुलाया।

राधा राधा जपत है, विरही मन मुरझाया।

राधा - कान्हा तेरी याद में, नैनन नींद न आया।

काजल अँसुवन बहत है, हिया हिलोरें खाया।

कृष्ण - मुकुट मिला वैभव मिला, और मिला सम्मान।

लेकिन तुम बिन व्यर्थ सब, स्वर्णकोटि का मान।

राधा - कृष्ण कृष्ण को देखने, आँखें थीं बेचैन।

वाणी तेरा नाम ले, थके नहीं दिन रैन।

कृष्ण - जबसे बिछुड़ा राधिके, नहीं मुझे विश्राम।

हर पल तेरी याद है, हर पल तेरा नाम।

राधा - स्वर्ण महल की वाटिका, और साथ सतभाम।

फिर भी राधा याद है, अहोभाग्य मम नाम।

कृष्ण - स्वर्ग अगर मुझको मिले, नहीं राधिका साथ।

त्यागूँ सब उसके लिए, उसके दर पर माथा।

राधा - सुनो द्वारिकाधीश तुम, क्यों करते हो व्यंग।

हम सब को छोड़ा अधर, जैसे कटी पतंग।

बने द्वारिकाधीश तुम, हम ब्रजमंडल ग्वाल।

हम सबको बिसरा दिया, हो गए कितने साल।

कृष्ण - सत्य कहा प्रिय राधिके, मैं अपराधी आज।

किन्तु तुम्हारे बिन सदा, पंछी बिन परवाज।

राधा बिन नीरव सदा, मोक्ष, अर्थ अरु काम।
नहीं विसरता आज भी, वो वृन्दावन धाम।

राधा - बहुत दूर तुम आ गए, कृष्ण कन्हैया आज।
तुमको अब भी टेरती, गायों की आवाज़।
ब्रजमंडल सूना पड़ा, जमुना हुई अधीर।
निधिवन मुझसे पूछता, वनिताओं की पीर।
बहुत ज्ञान तुमने दिया, गीता का हो सार।
क्यों छोड़ा हमको अधर, तुम तो थे आधार।

कृष्ण - कर्तव्यों की राह पर, कृष्ण हुआ मजबूर।
वरना कृष्ण हुआ कभी, इस राधा से दूर।
जनम देवकी से हुआ, जसुमति गोद सुलाय।
ग्वाल बाल के नेह की, कीमत कौन चुकाय।
कृष्ण भटकता आज भी, पाया कभी न चैन।
कर्तव्यों की राह में, सतत कर्म दिन रैन।
युद्ध विवशता थी मेरी, नहीं राज की आस।
सत्य धर्म के मार्ग पर, चलते शांति प्रयास।

राधा - भक्तों के तुम भागवन, मेरे हो आधीश।
अब तो आँखों में बसो, आओ मेरे ईश।
सौतन बंशी आज भी, अधरों पर इतराय।
राधा जोगन सी बनी, निधिवन ढूँढन जाय।

कृष्ण - नहीं बिसरत है आज भी, निधिवन की वो रास।
राधे तुम को त्याग कर, खुद भोगा वनबास।
बिन राधे कान्हा नहीं, बिन राधे सब सून।
बिन राधे क्षण क्षण लगे, सूखे हुए प्रसून।
बनवारी सबके हुए, राधाकृष्ण के नाम।
बिन राधा के आज भी, कृष्ण रहें बेनाम।

भक्त सुशील निवेदन करे –

कृष्ण प्रेम निर्भय सदा, राधा का आधार।
 राधा, कृष्ण संग सदा, कृष्ण रूप साकार।
 परछाई बन कर रही, राधा, कृष्ण सरूप।
 दोनों अमित अटूट हैं, एक छाया एक धूप।
 राधा वनवारी बनी, कृष्ण किशोरी रूप।
 कृष्ण सदा मन में रहें, राधा ध्यान सरूप।
 परिभाषित करना कठिन, राधा जुगल किशोर।
 किया समर्पित कृष्ण को, राधा ने हर छोर।
 तन मन से ऊपर सदा, प्रिया, कृष्ण की प्रीत।
 जोगन सा जीवन बिता, मीरा, कृष्ण विनीत।
 कृष्ण सिखाते हैं हमें, मानवता संदेश।
 जीवन में निर्झर बहो, हरो विकार क्लेश।
 कर्म सदा करते रहो, फल की करो न आस।
 सुरभित जीवन हो सदा, गर मन में विश्वास।



बाराती, घराती और सैम

दिव्या माथुर

पच्चीस साल बाद सैम सिन्हा भोपाल लौटा था. उसका मन बिल्कुल उचाट था. अटपटाया सा वह बेमक़सद गलियों-बाज़ारों में अकेला भटकता फिर रहा था. जब थक जाता तो वह घर लौट कर आँगन में पड़ी चारपाई पर लेट जाता और अदवायन में अपने पाँव उलझाए बस इसी बात पर मनन करता कि उसे मैनहैट्टन लौट जाना चाहिए अथवा नहीं; वहाँ भी उसका कौन बैठा था जो उसके मन में चल रहे संघर्ष को समझ सकता? उसके लगभग सभी दोस्तों के विवाह हो चुके थे और उनके लिए रोज़ शाम को पब अथवा क्लब के लिए समय निकलना असम्भव हो गया था. यहाँ उसके चाचा-चाची और उनका परिवार था जो उसपर जान छिड़क रहा था; यह बात और थी कि उसे उनका लाड़-दुलार एक आँख नहीं भा रहा था. पश्चिम की 'लीव मी एलोन' वाली मानसिकता से ग्रस्त, सैम को लग रहा था कि उसके 'पर्सनल स्पेस' का लगातार अतिक्रमण हो रहा था. उसकी ऐक्स-गर्लफ्रेंड पारा ठीक ही कहती थी कि 'ये इंडियंस बहुत चिपकू होते हैं. इंडिया जाओ तो वे मुझे २४/७ घूरते हैं जैसे कि मैं अजायबघर से आई हूँ.'

पाँच महीने हुए जब सैम के माँ-बाप की एक कार-दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी किंतु सैम ने भारत में अपने किसी रिश्तेदार को उनके निधन की सूचना नहीं दी थी. महीने में एक या दो बार उसके स्वर्गीय पिता फ़ोन पर अपने छोटे भाई स्वरूप और उसके परिवार से भोपाल में बात किया करते थे. उसे स्वयं भी झिनी-सी याद थी अपने चाचा-चाची की. करीब पच्चीस बरस पहले जब सैम भोपाल आया था तब चाची ने एक गोल मटोल बच्चे को जन्म दिया था, जिसे सब गोलू के नाम से पुकारते थे. पाँच वर्षीय सैम उसे गोदी में उठा लेता तो सब चिल्लाते, 'अरे गोलू को पकड़ो, कहीं सैम उसे गिरा न दे,' तो उसे बहुत गुस्सा आता था; न जाने क्यों यह याद उसके दिमाग़ में अब तक बसी हुई थी.

प्राइवेट स्कूल में दाखिला दिलवाने के बाद सैम को जब चाहे छुट्टी दिला कर भारत ले जाना सम्भव नहीं था इसलिए गाहे-बगाहे उसकी माँ और पिता अकेले ही भोपाल हो आते थे. सैम की क्रिसमस अथवा गर्मियों की छुट्टियों के दौरान सुपर-स्टोर्स देर रात तक खुले रहते थे और उसके माँ-बाप, जो दो-दो सुपर-स्टोर्स के मालिक थे, को साँस लेने की भी फ़ुर्सत नहीं मिलती थी. वे सैम से बहुत कहते कि वह अकेला अपने चाचा-चाची के पास भोपाल चला जाए किंतु वह मुँह लटकाए घर पर अकेला बैठना पसन्द करता था. कालेज पहुँचते-पहुँचते सैम के बहुत से यार-दोस्त बन गए, जिन्हें छोड़कर वह स्वयं भारत जाने से इंकार करने लगा और इस तरह उसका सम्बन्ध चाचा-चाची के परिवार से बिल्कुल टूट गया.

पाँच वर्ष पूर्व गोलू के विवाह पर भी केवल उसकी माँ ही जा पाई थीं, जिन के हाथ चाचा-चाची ने पौलिएस्टर का एक चमकदार सूट भिजवाया था जो गोलू की ससुराल से सैम के लिए विशेष तौर पर भिजवाया गया था. गोलू के विवाह के फ़ोटोज़ भी सैम को बड़े अजब, घटिया और कृत्रिम लगे थे और उसने सोचा था अच्छा ही हुआ कि वह शादी में नहीं गया.

ऐसा नहीं था कि सैम का मन न हुआ हो कि डायरी में चाचा-चाची का फ़ोन ढूँढे और उन्हें अपने माता-पिता की मृत्यु की सूचना दे किंतु पारा ने, जो उन दिनों उसकी गर्ल-फ्रेंड थी, उसे ऐसा करने से रोक दिया था कि भोपाल से कहीं उसके रिश्तेदार यहाँ आ टपके तो वह उन्हें कैसे सम्भालेगा. भारतीय मेहमानों से उकताई हुई पारा के विचार जानकर सैम ने भी यही धारणा बना ली थी कि रिश्तेदार मुसीबत की जड़ होते हैं, जो झूठी मुहब्बत दिखाते हैं और 'जप्फियाँ डालकर' उधार माँगने की फ़िराक में रहते हैं. सैम जब पिछली बार भोपाल

गया था तो उसके चाचा भी सुबह-शाम उसके पिता के पाँव छूकर आशीर्वाद लेते थे और पिता उन्हें गले लगा लेते थे. जब देखो तब चाची भी जेठानी के पाँव दबाने बैठ जातीं थीं. क्या वो सब नाटक था?

पिछले वर्ष के दौरान, पारा सैम के जीवन पर बुरी तरह हावी हो गई थी, न सुबह देखती और न शाम, जब देखो तब वह सैम से शराब की बोतल खोलने को कहती और फिर एक के बाद दूसरी बोतलें खुलती चली जातीं. माँ-बाप कुढ़ते किंतु चुप रहते क्योंकि वे डरते थे कहीं सैम फिर बाहर जाकर न पीने लगे; कम से कम बेटा आँखों के सामने तो था और जैसी भी थी पारा भारतीय थी, गोरी नहीं.

माँ-बाप की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात् सैम के बहुत से दोस्त और रिश्तेदार मैनहैटन में इकट्ठे हुए थे किंतु रहनुमाइ की थी उसके पिता के जिगरी मित्र, शान अंकल ने, जो उनके एकाउंटेंट भी थे. पारा को सैम के दुख का कोई अंदाज़ा नहीं था; उसके लिए तो शराब हर ग़म का इलाज थी. शराब, ड्रग्स और सैक्स; ये सब कहीं सस्ते में तो मिलते नहीं और अपना पर्स खोलने को पारा तैय्यार नहीं थी. सैम से उसे ये सब मिल रहा था किंतु घर में हफ़्ता भर से चल रहे भजन-कीर्तन और लोगों की भीड़ जो शोक प्रकट करने लगातार चली आ रही थी, की वजह से पारा उसके माता-पिता की तेरहवीं तक भी न टिकी. सैम का मन सचमुच खट्टा हो गया था. माँ के अभाव में घर की व्यवस्था बिगड़ चुकी थी. गंदे कपड़ों में और गंदे घर में वह भूखा-प्यासा बैठा रहता था. रिश्तेदार, दोस्त और पड़ोसी आते, जप्फियाँ मारकर उसे दिलासा देते और उसके लिए भोजन छोड़कर लौट जाते.

उधर, एक महीना पूरा होने को आया और मैनहैटन से भाई-भाभी का जब कोई फ़ोन नहीं आया तो स्वरूप को फ़िक्र हुई. उसने कई बार फ़ोन मिलाने की कोशिश की किंतु जैसे ही भारत से डायल किया गया नम्बर देखता, सैम घबरा कर 'बिज़ी' का बटन दबा देता. उसे समझाने वाला कोई न था; उसकी माँ का परिवार अमेरिका में बहुत पहले से ही बसा था किंतु किसी वजह से उन लोगों के यहाँ आना-जाना बंद हो चुका था. मृत्यु पर आए थे वे सब लोग किंतु दिखावे भर के लिए. सैम से रुकने के लिए नहीं कहा और न ही उन्होंने दोबारा उसकी ख़बर ली.

फिर एक दिन आत्मा के बहुत कचोटने पर सैम ने पिता की डायरी निकाली और चाचा-चाची का फ़ोन नम्बर ढूँढ निकाला. 'मैं मैनहैटन से सैम.' घंटा भर की मेहनत से तैय्यार किया गया एक अधूरा वाक्य सैम किसी तरह से बोल गया.

'अरे समीर, कैसे हो बेटा, हम तुम्हें बहुत दिनों से फ़ोन लगा रहे हैं पर कोई जवाब ही नहीं देता. भैया-भाभी कैसे हैं? उन्होंने भी हमें कब से फ़ोन नहीं किया...' 'समीर' के नाम से पुकारे जाने पर सैम भाव-विह्वल हो उठा; सिर्फ़ उसकी माँ ही उसे प्यार से समीर कहकर बुलाती थी - 'मम्मी..पापा..और डैड..'. 'मम्मी-पापा को क्या हुआ, समीर?' चाचा की घबराई हुई आवाज़ सुनाई दी और फिर सैम को फ़ोन पर एकाएक कई आवाज़ें सुनाई देने लगीं. चाचा ने घबराकर शायद फ़ोन गोलू को पकड़ा दिया था. 'समीर भैया, मैं अनंत हूँ...गोलू, आपका कज़िन. ताऊजी-ताई जी के बारे में आप क्या कह रहे थे?' अनंत ने काँपती हुई आवाज़ में सैम से पूछा जैसे कि वह जान गया था कि उसके ताऊ-ताई जी नहीं रहे.

फ़ोन पर हृदय-विदारक चीखें सुनकर सैम ने घबरा कर फ़ोन रख दिया. पारा ने उसे बताया था कि भारत में लोग बड़े अजीब ढंग से शोक प्रकट करते हैं; छाती पीट-पीट कर वे आँखें मलते हुए ज़ोर-ज़ोर से रोते हैं और बेहोशी का नाटक करते हैं, कई परिवारों में तो गा-गाकर शोक मनाया जाता है. तक्रिए से अपने आँख-कान बंद किए सैम को ऐसा आभास हुआ कि उसने बेकार में ही उन्हें फ़ोन किया; इस संसार में अब उसका कोई नहीं. फिर तो भोपाल से रोज़ फ़ोन आने लगे कि सैम कैसा है, माँ-पिता का क्रिया-क्रम ठीक से हुआ था कि नहीं; उनके फूलों का क्या हुआ, अकेले वह जीवन की नैय्या कैसे खे रहा है, वह भोपाल क्यों नहीं आ जाता आदि आदि. सैम

की मुसीबत यह थी कि वह हिन्दी बोलने में ज़ीरो था. उसके माँ-बाप ने सैम को एक महँगे प्राइवेट स्कूल में शिक्षा दिलवाई थी ताकि वह अमरीकियों की तरह अँग्रेज़ी बोल सके. वे गर्व से झूम झूम जाते थे जब उनका इकलौता बेटा अमरीकियों से अँग्रेज़ी में बात करता था. आपस में वे हिन्दी बोलते थे किंतु सैम से वे अपनी टूटी फूटी अँग्रेज़ी में ही वार्तालाप किया करते थे. सैम को पारा अथवा शराब में कोई दिलचस्पी नहीं रही थी किंतु पारा का और कौन था जो उसे मुफ्त में शराब पिलाता; कबाब खिलाता? घर खाली देखकर उसकी तो मौज ही हो गई किंतु चाचा-चाची के फ़ोन आते तो वह झींक उठती. 'ब्लडी लीचेस, वाए डोंट यू टेल देम टु फ़क औफ़...'

'वाए डोंट यू फ़क औफ़.' सैम कुछ अच्छे मूड में नहीं था. गुस्से में पारा ने बोटल दरवाज़े पर दे मारी और फिर दरवाज़े पर अपनी सारी भड़ास निकालती हुई सैम के जीवन से सदा के लिए चली गई. अपराध-भावना से तो सैम पहले से ग्रस्त था ही कि माँ-बाप के जीते-जी उसने उन्हें कितने दुख दिए और अब वह चाहे कितना भी पछतावा करे, वे तो देखने आने से रहे. वह अपने को इतना अभागा महसूस कर रहा था कि एक सुबह उसके दिमाग़ में आया कि क्यों न वह आत्महत्या कर ले! अपने पिता की पिस्तौल निकाल कर वह अपने को तैय्यार कर ही रहा था कि शान-अंकल उसे साप्ताहिक हिसाब-किताब दिखाने के लिए आए. एक वही थे जो बिना कुछ कहे-सुने उसकी दुखती रगों पर जैसे मरहम रख देते थे.

'बर्ख़ुरदार, आज या कल, आपको अपने कारोबार की कमान तो सम्भालनी ही होगी; आपका दिल भी बहल जाएगा. हम चाहते हैं कि सबसे पहले आप अपने माँ-बाप के फूल गंगा में बहा कर जाएँ ताकि उनकी रूहों को सुकून मिले.' पिस्तौल को नज़रन्दाज़ करते हुए शान अंकल बोले थे. अपने दोस्त के इंतकाल से उन्हें भी बहुत सदमा पहुँचा था किंतु उनकी पनीली आँखें मानो मुस्कुरा कर उसे हौसला दे रही थीं.

'ओनलि इफ़ यू कम विद मी, शान अंकल.' सैम ने उनकी बात झट मान ली; शायद हरिद्वार जाकर ही उसे शांति नसीब हो. बेचारे चाचा-चाची की भी बात रह जाएगी जो उसके लिए सचमुच परेशान थे.

'काश कि यह सबाब हमें मिल सकता, बर्ख़ुरदार, पर हम हिंदु रस्मों-रिवाज़ से बिल्कुल वाकिफ़ नहीं हैं. हमारी हिदायत तो यही होगी कि आप अपने चाचा-जान को साथ लेकर जाएँ, उन्हें भी तो सुकून की ज़रूरत होगी.' शान-अंकल ने सैम से नम्बर लेकर भोपाल फ़ोन मिलाया. शोक-ग्रस्त चाचा और चाची बेताब थे जानने के लिए कि हुआ क्या था. शान अंकल ने दुर्घटना के बारे में उन्हें तफ़्सील से बताया और फिर उन्हें सैम से हरिद्वार में मिलने की गुज़ारिश की.

हरिद्वार पहुँचकर भी सैम एक पर-कटे पंछी की तरह फड़फड़ाता रहा. अपना सिर मुँडवाने में सैम ने आनाकानी की तो चाचा ने उसकी हौसला-अफ़ज़ाई के लिए अपना सिर भी मुँडवा लिया. सैम का मन हो रहा था कि गंगा में डूबकर वह बस अपने प्राण दे दे; चाचा से उसका दुख देखा नहीं जा रहा था. उन्होंने जल्दी-जल्दी सारी रस्में निपटवा दीं और अगली सुबह ही वे भोपाल के लिए रवाना हो गए. ट्रेन में भी सैम अधमरा सा पड़ा रहा, चाचा के बार-बार आग्रह करने के बाद उसने बस थोड़ी सी कौफ़ी पी ली.

'भैया-भाभी की बस यही निशानी बची है हमारे पास; इसे हमें हर हालत में खुश रखना है.' चाचा की आज्ञानुसार बेचारी चाची दिन रात सैम के आगे-पीछे घूम रहीं थीं किंतु सैम था कि मुस्कुरा के भी राज़ी नहीं था. मुश्किल यह थी कि सैम की हिन्दी कमज़ोर थी और चाचा-चाची की अँग्रेज़ी. सैम की अँग्रेज़ी अनंत और उसकी पत्नी मीरा के भी पल्ले नहीं पड़ रही थी; चाचा-चाची को अपने ही बेटा-बहू की शिक्षा पर संदेह होने लगा था, 'इतना पढ़-लिख के भी तुम दोनों ने बस भाड़ ही झोंकी.' घर में सब हैरान और परेशान थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें.

'तुमने अभी तक शादी क्यों नहीं की? अब तक तो तुम्हारे बाल-बच्चे हो जाने चाहिए थे.' मौका पाते ही चाची ने सैम से पूछा. पारा उसे जता चुकी थी कि दुनिया की कोई भी लड़की सैम के साथ सुखी नहीं रह सकती थी, वैसे भी अमेरिका में ३५-४० वर्ष से पहले विवाह के बारे में कोई नहीं सोचता.

‘ब्याह को राजी हो तो हम तुम्हारे लिए लड़की देखें.’ चाची ने पूछा तो सैम को लगा कि उन्हें कोई और काम-धन्धा नहीं था क्या? उसे अनमना देख चाचा ने इशारे से चाची को चुप तो करवा दिया किंतु मन ही मन वह तय कर चुकी थी कि सैम की शादी तो वह करवा के ही दम लेगी; जेठ-जेठानी की आत्माओं को शांति पहुँचाने का मानो उन्हें ठेका मिल गया था.

एक पूरा हफ़्ता सैम अपने कमरे में लेटा छत और दीवारें ताकता रहा. चाचा-चाची, अनंत और मीरा सब के सब सैम की टहल के लिए एक टाँग पर खड़े थे किंतु उसे लग रहा था कि वे सब उसकी निजी ज़िन्दगी में हस्तक्षेप कर रहे थे. उसे भूख नहीं होती तो भी उसकी थाली में चाची रोटियाँ धरे चली जातीं, ‘खाओ-खाओ’ का ऐसा शोर मचा रहता जैसे उनके जीवन का एकमात्र ध्येय केवल भोजन हो. कभी लस्सी तो कभी जूस लिए मीरा जब तब उसके सिर पर आ खड़ी होती तो वह बिफ़र उठता किंतु सैम यह भी जानता था कि अमेरिका में उसका ऐसा बर्ताव कोई एक दिन भी नहीं बर्दाश्त करता.

मीरा सैम को अच्छी लगती थी; उसकी अँग्रेज़ी भी ठीक-ठाक ही थी. वह चाचा-चाची की सब बातें समझ जाता था किंतु हिंदी में जवाब देना उसके लिए कठिन था. हँसी-हँसी में मीरा उसकी हिन्दी सुधारने लगी तो सैम भी उसका उच्चारण ठीक करने लगा. धीरे-धीरे न जाने कब वह परिवारजनों से खुलने लगा, विशेषतः मीरा और उसके चार-वर्षीय पुत्र शशांक से, जिसके साथ वह घंटो खेलता रहता या फिर उसे लेकर वह लम्बी सैर को निकल जाता; शशांक के अटपटे प्रश्न उसका घंटों मनोरंजन करते.

इसी बीच शहडोल में चाची की भतीजी पुष्पा का विवाह तय हो गया; वे सभी निमंत्रित थे. अनंत-मीरा और शशांक शहडोल के लिए दो दिन पहले ही निकल चुके थे. चाचा-चाची सैम को अकेला छोड़कर जाने को तैय्यार न थे. बिना शशांक के सैम का भी मन नहीं लग रहा था. मैनहैट्टन में माँ सैम को ज़बर्दस्ती हिन्दी फ़िल्में दिखाने ले जाया करती थीं; जिनमें विवाहों के अवसर पर मचने वाले धमाल से वह अच्छी तरह से वाकिफ़ था. उसका मन भी गाँव की शादी देखने का हो आया; चाचा-चाची की तो बाँछें ही खिल गईं.

रेलगाड़ी से यात्रा करने की बजाय सैम ने कार से जाने की सोची ताकि वह जब चाहे वहाँ से खिसक कर भोपाल वापिस आ सके. भोपाल से शहडोल का सफ़र करीब दस घंटों का था और रास्ते के लिए चाची पूरी रसोई साथ में ले जाना चाहती थीं ताकि रास्ते में सैम को किसी चीज़ की कमी महसूस न हो.

‘तुम्हारी चाची भी न...’ कहते हुए चाचा खुशी-खुशी सामान कार में रख रहे थे. पानी से भरी सुराही को किसी तरह डिब्बी में टिकाते वक्त ड्राइवर और चाची के बीच तू-तू मैं-मैं हो रही थी. चाची की सनक और ऐसी ही छोटी-छोटी हठें सैम को अब अच्छी लगने लगी थीं.

शहडोल पहुँचकर सैम का मन कुछ शांत हुआ. वही सब जो उसने माँ के बनाए चित्रों में देखा था-पनघट पर पानी भरती हुई रंग-बिरंगे कपड़े पहने औरतें, झूले पर झूलती नटखट बालिकाएँ, नहर में नहाते नंग-धड़ंग बच्चे और सजे-धजे मर्द, जो हाथ हिलाए बिना आराम से पड़े मस्ती कर रहे थे और फिर भी उनकी ख़ूब खातिर हो रही थी. सैम मुस्कराया; बच्चू अमेरिका में होते तो नानी याद आ जाती; काम भी सम्भालते और डाँट भी खाते.

सुबह पक्षियों के शोर से सैम की नींद खुली तो वह अँगड़ाई लेता हुआ उठ बैठा और उसके उठते ही पूरी हवेली में काम-धन्धा शुरू हो गया. पूरा परिवार उसके ब्रश करने का ही इंतज़ार कर रहा था; फटाफट चाय नाश्ता लगा दिया गया. शुक्र था कि उसके लिए चीनी और दूध अलग से रखे गए थे. खाने-पीने से बचने के लिए वह हवेली से बाहर निकल आया. सामने एक खस्ता हाल छप्पर के नीचे नन्हे-मुन्हे बच्चे पहाड़े रट रहे थे और उनकी अध्यापिका थी एक सत्तरह-अठारह बरस की युवती, जो सैम को देखकर झटपट बाहर आ गई.

‘हाउ वाज़ यौर टी, सर?’ उसने पूछा. ओह तो सुबह की चाय का इंतज़ाम इस समझदार लड़की ने किया था. सैम को अच्छा लगा कि वह किसी से अँग्रेज़ी में बात कर सकता था.

‘नो थैंक्स, में गूमने को निकला. शेदोल में कुच देखने का है?’ सैम ने अपनी टूटी-फूटी हिन्दी में उससे पूछा. अपनी हँसी दबाते हुए लड़की ने अपना परिचय दिया था. ‘आस पास तो कुछ देखने को नहीं है पर कार से आप आसानी से अमरकंटक या बैकुण्ठपुर जा सकते हैं, नर्मदाजी के दर्शन भी हो जाएँगे.’

‘नरमादा कौन है?’

‘नर्मदा एक नदी का नाम है. उनके दर्शन मात्र से आपके सब दुखों का निवारण हो जाएगा; शायद आप इन सब बातों में बिलीव नहीं करते होंगे. आप बांधवगढ़ नैशनल पार्क जा सकते हैं.’

‘दिकाने को तुम मैरे सात चालोगी?’

‘सौरी, मैं आपके साथ कहीं नहीं जा सकती,’ कहते हुए सुप्रिया वापिस अपने छात्र-छात्राओं के पास लौट गई. ऐसा सैम ने क्या कह दिया था कि उसे बुरा लग गया?

शाम को बारात आने से पहले सुप्रिया फिर नज़र आई तो सैम उसके पास चला आया. शादी की तड़क-भड़क में एक वही थी जो सफ़ेद साड़ी पहने थी, किंतु फिर भी वह बहुत सुन्दर लग रही थी. घरातियों को हाथ जोड़े खड़ा देख सैम ने भी हाथ जोड़ दिए.

‘आपको हाथ जोड़ने की ज़रूरत नहीं है. यू आर नौट ए घराती.’ सुप्रिया सैम को घरातियों और बारातियों के विषय में बताने लगी तो सैम ने शुक्र मनाया कि वह उससे बात तो कर रही थी.

‘बट दैट्स नौट फ़ेयर.’ सैम ने कहा.

‘नर्थिंग इज़ फ़ेयर इन दिस वर्ड.’ सुप्रिया कुछ अशांत होते हुए बोली. सैम ने सोचा कि वह बड़ी अजीब लड़की थी, ‘वेरी अनप्रेडिक्टेबल’.

तभी बारात आ गई; बारातियों के नख़रे ही नहीं मिल रहे थे. लोग तीन झुंडों में बँट गए थे; बाराती, घराती और तमाशाई, जिनमें भिखारी बच्चों की तादाद काफ़ी बड़ी थी. लम्बी चौड़ी उबाऊ रस्मों के बाद दूल्हा-दुल्हन ने एक दूसरे को वर-मालाएँ पहनाई तो भीड़ में कुछ गर्मी आई. दूल्हा के दोस्तों ने उसे गोदी में उठा लिया तो उसके गले में वरमाला पहनाने के लिए छुटकी पुष्पा ने अपने हाथ ऊँचे किए किंतु वह दूल्हे के कन्धे तक भी नहीं पहुँची. उसकी सहेलियाँ कहीं से एक स्टूल उठा लाई, जिस पर चढ़कर पुष्पा ने वर के गले में माला पहनाई.

सैम को लगा कि घरातियों के लिए कन्या के विवाह की रस्में छोटी छोटी पहाड़ियाँ थीं जिन्हें पार करते हुए वे लम्बी-लम्बी साँसे भर रहे थे. किसी तरह बाराती जीम कर उठे तो घरातियों ने भगवान का लाख-लाख शुक्र मनाया. अब मेहमानों की बारी थी, जिनमें चाची का परिवार और सैम भी शामिल थे. वे अभी जीमने बैठे ही थे कि दूल्हा के मित्रों ने फ़व्वियाँ कसनी शुरू कर दीं. सैम को कुछ समझ नहीं आ रहा था.

सैम के दोने में कढ़ी परोसी ही गई थी कि अचानक एक चप्पल उसकी पतल में आ गिरी, कढ़ी के छीटे उछल कर सैम की अचकन और पाजामें पर आ गिरे तो पुष्पा के पिता और भाई हाथ जोड़ते हुए सैम से माफ़ी माँगने लगे.

‘यार, तेरी ससुराल में पकौड़ियों की जगह कढ़ी में क्या चप्पलें परोसी जाती हैं.’ दुल्हा के मित्र भोंडे तरीक़े से हँस रहे थे.

‘डजंट मैटर, कोई बात नई.’ तमतमाया हुए सैम को मीरा चुप रहने का संकेत दे रही थी.

‘अबे चाट ली हो तो हमारी चप्पल तो वापिस कर दे.’ दुल्हा के मित्र अब सैम से सीधे मुख़ातिब थे. सैम इतना समझ गया कि उसकी बेइज़्जती की जा रही थी किंतु उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे. दुल्हन के पिता, भाई और अन्य घराती हाथ जोड़े हुए बीच-बचाव करने में लगे थे. तभी एक मरगिल्ला-सा फटेहाल बच्चा भीड़ में से निकलकर सैम की ओर आया और कढ़ी से सनी चप्पल उठाकर चाटने लगा. चप्पल चाटकर उसने बारातियों की ओर फेंक दी और फिर वह सैम की पतल में रखे खीर से भरे दोने को उठाकर भागा. बहुत से

भिखारी बच्चे उसपर टूट पड़े. उसकी फटी कमीज़ और बदन पर खीर फैल गई थी, जिसे वह जल्दी जल्दी चाटने में लगा था. मधु-मक्खियों से अन्य भिखारी बच्चे भी उसकी कमीज़ और बदन पर लगी खीर चाट रहे थे.

चप्पलें, जूते और छड़ियाँ घुमाते घराती उदंड भिखारियों को खदेड़ने में लगे थे. तभी एक फटेहाल औरत भिखारियों से घिरे बच्चे की कमीज़ उतार कर उसे पीटने लगी. बच्चे पर पीटने का कोई असर नहीं हुआ; अपनी ढीठ आँखों में आशा की एक ज्योति लिए वह अब भी बारातियों की ही ओर देख रहा था कि उनमें से फिर कोई जूता या चप्पल फेंकें तो शायद आज उसका पेट भर जाए.

मन ही मन सैम परेशान था कि तथाकथित प्रगतिशील भारत के बच्चे इतने भूखे कैसे रह गए थे? अमेरिका में अपनी माँ के साथ जो भारतीय सीरियल्स वह देखता था; उनमें तो बच्चों की कुछ और ही तस्वीर पेश की गई थी.

सैम ने खड़े होकर अपनी पत्तल उठाकर उस बच्चे को देनी चाही ताकि वह औरत उसे पीटना बंद कर दे. ढेरों बच्चे लपकते हुए आए और पत्तल पर टूट पड़े. सैम को उबकाई आने लगी; चाचा सैम को घसीटते हुए घर के अन्दर ले गए. रात भर सैम उस घटना को लेकर परेशान रहा. अल्ल-सुबह बीन की आवाज़ सुनकर वह खिड़की से झाँकने लगा. विदा हो रही थी. औरतें ज़ोर-ज़ोर से रो-गा रही थीं; सैम को यकायक पारा याद आई, जो इस वक्त शराब में धुत्त शायद किसी के साथ सोई पड़ी होगी.

सैम की बची-खुची रात करवटें बदलते निकली; चाहे उसे पीट ही क्यों न रही थी, उस भिखारी बच्चे के पास उसकी माँ तो थी. सैम के पास सब कुछ होते हुए भी कुछ न था. उसके माँ-बाप ने उसे क्या नहीं दिया; स्वस्थ शरीर, शिक्षा और धन किंतु स्वयं उसने क्या हासिल किया? माँ-पिता के समझाने-बुझाने के बावजूद उसका दिमाग न तो व्यवसाय में लगा और न ही वह उच्च-शिक्षा हासिल कर सका. फिर भी उनकी केवल एक ही इच्छा थी कि वे अपने पोता-पोती की शकल देखकर ही मरें. जिस शाम को उनकी कार-दुर्घटना में मृत्यु हुई, वे सैम के लिए ही एक लड़की देखने कैलिफ़ोर्निया जा रहे थे. ऐन वक्त पर सैम ने उनके साथ जाने से इंकार कर दिया था. 'समीर बेटा, यौर डैड हैज़ हाइ ब्लड-प्रेसर, ही शुड नौट ड्राइव.' माँ ने कहा भी था किंतु उस समय सैम को यही लगा था कि उसे साथ ले जाने के लिए माँ उसे ब्लैकमेल कर रही थीं. उनके साथ जाता तो शायद वो दुर्घटना न होती अथवा वे तीनों ही मारे जाते.

'समीर बेटा, तुझे सुप्रिया कैसी लगी?' सुबह-सुबह चाची पास आ बैठीं. अब तक वह सैम से कई नवयुवतियों के बारे में पूछ चुकी थीं, जो विवाह के घर में चहकती हुई घूमती रहती थीं.

'सूपीरिया अबी बच्ची है.' अपने हिन्दी बोलने की तारीफ़े सुन-सुनकर सैम की हिम्मत बढ़ गई थी और वह अब हिन्दी बोलने से घबरा नहीं रहा था.

'बच्ची? इस बरस सुप्रिया पच्चीस बरस की हो जाएगी. सुन्दर है, पढी-लिखी है, घर का सारा काम-काज जानती है. बाल-विधवा है तो क्या हुआ? तुम्हारे वहाँ तो इसे कोई बुरा नहीं मानता, हैं न?'

'वो बात नई, में थर्टी का हूँ, चाची जी.'

'तो क्या हुआ? वैसे भी सुप्रिया से कोई और तो ब्याह रचाने से रहा. मुझे तो लगता है कि भगवान ने तुम्हें यहाँ उसी के लिए ही भेजा है.'

'पर वो मुझे पसन्द नई करती.'

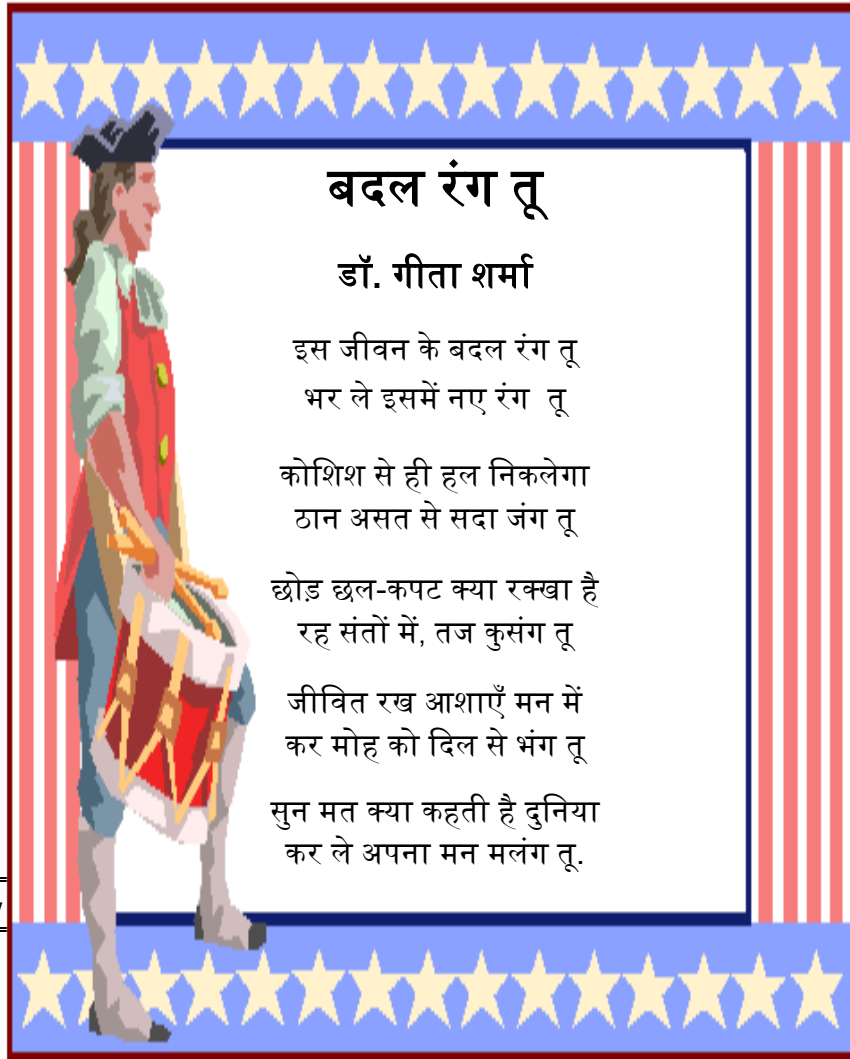
'अरे, वो तो तुमसे कैसी मीठी-मीठी बातें करती रहती है, हमने क्या देखा नहीं?' आँखें नचाती हुई चाची उठ गई तो सैम को लगा कि बिना सुप्रिया की पसन्द जाने कहीं चाची उस बेचारी पर यह विवाह थोप ही न दें. उसे सुप्रिया पसंद थी किंतु अमेरिका जाने के लिए शायद वह तैय्यार न हो और तैय्यार हो भी जाए तो क्या वह वहाँ के समाज में खप पाएगी. उसे पारा की याद आई, शायद वह सुप्रिया की मदद करे. नहीं नहीं,

पारा को सुप्रिया से दूर ही रखना होगा. कैसी बद्तमीज़ी से बात करती है, विशेषतः भारतीयों के बारे में उसकी भावनाएँ कठोर हैं. शायद सुप्रिया को बच्चे पसन्द न हों, जो माँ-बाप की मृत्यु के बाद अचानक सैम के लिए बहुत आवश्यक हो गए थे. कितने ही सारे प्रश्न थे जो सैम के दिमाग को परेशान किए थे किंतु बार-बार जो उसके मन में घूम रहे थे, वे थे छीना-छपटी में लगे भूख से व्याकुल भिखारी बच्चे, विशेषतः वह बच्चा जिसने कढ़ी से लिपटी चप्पल तक को चाट डाला था.

सारा दिन खेत में बैठे-बैठे सैम ने आखिर तय कर ही लिया कि वह गाँव के सभी भिखारी बच्चों की परवरिश करेगा. भोजन के लिए ही छीना-छपटी करते रहे तो जीवन में वे और क्या हासिल कर पाएँगे? यकायक उसे लगा कि जैसे उसे जीवन का उद्देश्य मिल गया हो; एक बड़ा बोझ उसके दिमाग से उतर गया था. उसे लगा कि उसके माँ और पिता उसके इस संकल्प से खुश होंगे. उसके पिता कहा करते थे कि मुहिम चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, एक सिरे से बस जुटने भर की देर है, कहीं न कहीं तो उसका दूसरा सिरा मिल ही जाएगा. एक पराएँ देश में जाकर उसके माँ-बाप ने जब दो सुपर-स्टोर्स खड़े कर लिए तो क्या वह कुछ बच्चों की परवरिश भी नहीं कर पाएगा? उसकी नसों में भी तो उन्हीं का खून बह रहा था. सामने से सुप्रिया को आते देख वह मुस्कुराने लगा.

‘विल यू मैरी मी, सुपरिया? मुझसे शादी करोगी? बेफ़िक्री के अंदाज़ में सुप्रिया से पूछा जो मुँह फाड़े उसे निहार रही थी. भारतीय सीरियल्स के ये संवाद सैम ने कई बार सुन रखे थे.

‘सूपरिया, बौत सोच के मुजे बताना बिकौज़ मैं उन सब पुअर बच्चा लोग को एडौप्ट करना चाता हूँ.’ बिना किसी लाग-लपेट के सैम ने अपने मन की बात सुप्रिया को बता दी क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि चाहे सुप्रिया विवाह से इंकार कर दे; इस मुहिम में उसका साथ अवश्य देगी.



बदल रंग तू

डॉ. गीता शर्मा

इस जीवन के बदल रंग तू
भर ले इसमें नए रंग तू

कोशिश से ही हल निकलेगा
ठान असत से सदा जंग तू

छोड़ छल-कपट क्या रक्खा है
रह संतों में, तज कुसंग तू

जीवित रख आशाएँ मन में
कर मोह को दिल से भंग तू

सुन मत क्या कहती है दुनिया
कर ले अपना मन मलंग तू.

मातृभाषा हिन्दी राष्ट्रभाषा बने

डॉ. अंशुमाला

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, परम्पराओं और जीवन-मूल्यों की संवाहक भाषा ही होती है जो माँ की लोरी के साथ शिशु के मन और मस्तिष्क पर अपना प्रभाव डालती है. भाषा मनुष्य की समाजीकरण की आधारभूत आवश्यकता है. व्यक्ति की पहचान बनाये रखने में मातृभाषा की अपनी भूमिका होती है. मातृभाषा पर अपना आधिपत्य जमाये बिना, कोई भी व्यक्ति अपने देश की माटी से नहीं जुड़ सकता है. पराई भाषा में अभिव्यक्ति अपने ही देश में व्यक्ति को पराया कर देती है.

भाषा का महत्वहीन होना अथवा कमजोर पड़ना संस्कृति की पहचान का संकट उत्पन्न कर सकता है. संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था यूनेस्को ने विश्व की भाषाओं को खतरे में बताने वाले एटलस एवं विशेषज्ञों के हवाले से कहा है कि पूरे विश्व में बोली जाने वाली छः हजार भाषाओं में से करीब आधी खतरे में हैं. पिछली तीन शताब्दियों में भाषाएँ तेजी से खत्म या गायब हुई हैं.

यूनेस्को द्वारा २१ फरवरी को मातृभाषा दिवस घोषित किया गया है. विशेषज्ञों के अनुसार किसी समुदाय की भाषा तब खतरे में होती है जब कम से कम तीस प्रतिशत उनके बच्चे उन्हें सीखते ही नहीं हैं.

कोई भाषा क्यों अपनी पहचान खोती है इसका खुलासा करते हुए एटलस कहता है कि ऐसा तब होता है जब उसके बोलने वाले कहीं उससे ज्यादा आक्रामक व आर्थिक रूप से मजबूत संस्कृति के सम्पर्क में आते हैं. नागरिक अपने बच्चों को ख़ास तौर पर नौकरी पाने के मक़सद से अपने पर हावी संस्कृति की भाषा सीखने के लिए उकसाते हैं. स्थिति तब बदतर होती है जब सत्तासीन लोग स्कूल-कॉलेज में स्थानीय भाषा के इस्तेमाल को बकायदा हतोत्साहित करना शुरू करते हैं, कभी-कभी दण्डित भी करते हैं. आज भारत देश में कमोवेश यही स्थिति है.

हमारे देश में विविधता में एकता निहित है. सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं – हिन्दी, उर्दू, बंगला, माराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, असमी, पंजाबी, कश्मीरी, संस्कृत आदि. किन्तु भिन्न-भिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाले भाव तथा सम्प्रेषण एक हैं, तथा हम साँझा सांस्कृतिक परिवेश के कारण प्रायः एक ही तरह के विचारों तथा कथा वस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी बोली में साहित्य रचना करते हैं. रामायण और महाभारत की प्रायः सभी भाषाओं के बीच कथा शैली अभिव्यक्ति में अद्भुत समानता है. इसके अलावा इन भाषाओं की जननी संस्कृत और प्राकृत में जो भारतीय साहित्य की रचना हुई है, उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं पर है. यही वैचारिक और सांस्कृतिक एकता राष्ट्र को जोड़ती है. यह भी ध्यान देने योग्य है कि फ़ारसी लिपि को छोड़कर भारत की अन्य लिपियों की वर्णमाला एक ही है. जैसे हम हिन्दी में क,ख,ग आदि अक्षर पढ़ते हैं, वैसे ही ये अक्षर भारत की अन्य लिपियों में भी पढ़े जाते हैं परन्तु लिपियों की भिन्नता के कारण उनको लिखने का ढंग अलग है.

आज वैश्विक स्तर पर सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी अपनी देवनागरी लिपि उच्चारण (ध्वन्यात्मकता) के लिहाज़ से सबसे शुद्ध और विज्ञान-सम्मत भाषा है. हमारे यहाँ एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिन्दु (अनुस्वार) का भी महत्त्व है. दूसरी भाषा में यह शुद्धता एवं वैज्ञानिकता नहीं पाई जाती है. हिन्दी भाषा हम जैसा लिखते हैं, वैसे ही बोलते हैं. तथाकथित वैश्विक भाषा अँग्रेजी में भी एक ही ध्वनि के लिए अनेक अक्षर उपयोग में लाये जाते हैं जिन्हें एक बच्चे के लिए याद करना कठिन है. आश्चर्य की बात है कि ऐसी अवैज्ञानिक, अनियमित, अव्यवस्थित अँग्रेजी हम अपने छोटे-छोटे बच्चों पर थोप रहे हैं. वैसे बच्चे जो कॉन्वेन्ट या अँग्रेजी माध्यम से नहीं पढ़े हैं वे बच्चे जब कॉलेज में पहुँचते हैं तो उन्हें अँग्रेजी आती नहीं और हिंदी हमने उन्हें

सीखने ही नहीं दी. किसी भी मौलिक विचारों की उत्पत्ति, विकास, निरन्तरता और उसका विश्लेषण व्यक्ति अपनी मातृभाषा में ही करता है.

आज जीविका के कारण अँग्रेजी भाषा का आश्रित बनाकर हमें मानसिक तौर पर गुलाम बनाया जा रहा है. आज पूरे विश्व में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ निवासियों को अपनी भाषा बोलने, लिखने, पढ़ने में शर्म महसूस होती है. हम अपनी श्रेष्ठ भाषाओं को दरकिनार कर गलत अँग्रेजी बोलने में गर्व महसूस करते हैं. भाषा का ज्ञान व्यक्ति विकास एवं योग्यता के लिए आवश्यक तो है लेकिन मातृभाषा और राष्ट्रभाषा की कीमत पर नहीं.

कोई भी समाज अपनी भाषा के बिना तरक्की नहीं कर सकता है. आयातित सामान और स्वयं विकसित सुविधाओं के उपयोग की सुखानुभूति को समझ कर ही हम भाषा के महत्त्व को समझ सकते हैं. इस सम्बन्ध में हमारे सामने चीन, जापान, रूस, अमेरिका आदि देशों का उदाहरण है.

हिन्दी भाषा ज्ञान का भंडार है. जो लोग एक भाषा विशेष को ज्ञान का स्रोत बताते हैं उन्हें समझना जरूरी है की नोबेल पुरस्कार विजेता जगदीश चन्द्र बसु ने अपना अनुसन्धान अँग्रेजी में नहीं अपितु बंगला में प्रस्तुत किया था. शून्य के आविष्कारक आर्य भट्ट, पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, यह प्रमाणित करने वाले भास्कराचार्य का अँग्रेजी भाषा से कोई लेना-देना नहीं था. दुनिया भर के लोग ईसा से ४०० वर्ष पूर्व नालंदा में अँग्रेजी में नहीं भारतीय भाषाओं में ज्ञान प्राप्त करने आते थे. जहाँ तक वैज्ञानिक तकनीकी, चिकित्सा विज्ञान, प्रौद्योगिक, व्यवसायिक, पुस्तकों की उपलब्धता की बात है इसके लिए हिन्दी एवं मातृभाषाओं से सरल शब्दों के भण्डार के आधार पर व्यापक रूप से पुस्तकों का निर्माण करना चाहिए ताकि हमारी बहुसंख्यक विलक्षण बुद्धि वाले युवा पीढ़ी जिन्होंने अपनी मातृभाषा में पढ़ाई की है, वे लाभान्वित हो सकें.

विशेष तौर पर चिकित्सा विज्ञान, न्याय के क्षेत्र में अँग्रेजी भाषा के कारण बहुतायत विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति, ज्ञानवर्धन एवं मौलिक विश्लेषण की क्षमता को सीमित करती है. उन्हें रटन्तु बनाती है. जबकि व्यावहारिक क्षेत्र में कार्यस्थल पर इन्हें हिन्दी और प्रान्तीय भाषा से ही पाला पड़ता है. ताइवान, दक्षिण कोरिया, जापान, चीन आदि देशों में विज्ञान तथा तकनीकी विषय अपनी भाषा में पढ़ाये जाते हैं. विदेशी छात्रों को भी इन देशों में ज्ञान अर्जन के लिए उस देश की भाषा सीखनी होती है. यही व्यवस्था भारत में भी होनी चाहिए.

आज जन-सम्पर्क के सभी क्षेत्रों जैसे संचार, पत्रकारिता, अनुवाद, सर्वेक्षण इत्यादि में जीविका का माध्यम तेजी से हिन्दी होता जा रहा है. दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों में गीत, संगीत, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से अपार धनराशि जीतने की ललक ने हिन्दी सीखने की ललक बढ़ाई है. भारत को उन्नत देश की श्रेणी में लाने के लिए जीविका के सभी क्षेत्रों में शिक्षा एवं परीक्षा के माध्यम को हिन्दी एवं भारतीय भाषा बनाने की आवश्यकता है. इसके लिए मौलिक एवं स्वतंत्र लेखन को प्राप्ताहित किया जाना चाहिए. इसके लिए राष्ट्रीय सोच बनाने की आवश्यकता तथा मानसिकता बदलने की आवश्यकता है.



अचल सुहागन वीर की

कादम्बरी मेहरा

भेजा था तिलक लगाकर समरांगण मेरे वीर ।
आ गए वीरगति पाकर कैसे मैं धारूँ धीर ।

आजन्म गर्व से पहनूँगी ये कंगन ये सिंदूर,
मर कर भी अमर हुए जग में ना गए तुम हमसे दूर ।

क्षणभंगुर प्रणय हमारा पर टूटेगा ना प्रियतम,
मैं अचल सुहागन जपती हूँ नाम तुम्हारा हरदम ।

मैं रात की रानी बनकर महकी तेरे उपवन में,
यम ने क्या छड़ी फिराई, तुलसी बन गई आँगन में ।

जलते पूजा के दीपक, चौरे पर साँझ सवेरे ।
मैं बनी सहारा सबकी, नित याद तुम्हारी घेरे ।



टिम्बकटू में खोरोना

अनिल जोशी

एक द्वीप था - टिम्बकटू। उसकी प्रजा सब प्रकार से समृद्ध और सुखी थी। उसे पृथ्वी पर स्वर्गलोक जैसा माना जाता था। इतना सुखी - इतना सुखी की वहाँ चाकलेट के पहाड़ दिखाई देते थे। आईसक्रीम की नदियाँ बहती थीं। पीजा के पठार थे। मैक्रडानलड के नोन वेज बर्गर की घाटियाँ थी। बच्चे पैदा होते ही माँ का दूध नहीं बल्कि कोक या पेप्सी माँगते थे।

उस देश का राजा पम्प था। उसका नाम पम्प था पर वह दरअसल लोगों में हवा भरने का नहीं, निकालने का काम करता था। उसमें खुद में हवा भरी रहती थी। वह अपने चुटकलों के लिए विख्यात था। न .. ना वे चुटकले नहीं कहता था। दरअसल वह बातें सीरीयसली ही लिखता था। पर दुनिया उसके चुटकलों पर हँसा करती थी। उस जमाने में उनके चुटकलों को ट्वीट कहा जाता था। वह ट्वीट में आम तौर पर बीट करता था। पर उसकी ताकत की वजह से बहुत से लोग बीट को उसकी कृपा का प्रसाद ही मानते। वह कभी कह देता कि किसी द्वीप को चुटकियों में उड़ा देंगे। कभी कहीं दीवार खड़ी करने की बात करता। वह अपने दोस्तों को डराता और दुश्मन डर जाते थे कि अगर यह दोस्तों की ऐसी-तैसी कर रहा है तो दुश्मनों के साथ क्या करेगा। सनकी है.. इससे दूर रहो।

एक बार टिम्बकटू द्वीप के राजा पम्प को बताया गया कि पता चला है कि चिंग चिंग द्वीप में खोरोना महामारी हो गई है। चिंग चिंग द्वीप के लोग मरने लगे हैं। टिम्बकटू द्वीप में चिंग चिंग द्वीप से भी व्यापार करने लोग आते हैं। इसलिए टिम्बकटू द्वीप में भी महामारी का खतरा है। उसने राज्य के वैद्यों को बुलाया और उनसे पूछा। सबने कहा कि मामला बहुत संकटपूर्ण हो सकता है। प्रजा को कहा जाए कि वह घर में ही रहे। पम्प ने हवा में मुट्ठी लहराई और कहा कि हमारी चिकित्सा व्यवस्था की असली हालत मैं जानता हूँ।

हमारे चिकित्सालयों में वैद्यों के पास काफी दिनों से कोई केस नहीं आ रहे हैं। शिकायत आई है कि वे सड़क पर चलते स्वस्थ लोगों को ललचाई नजरों से देखते हैं। कईयों को तो वे अस्पताल के अंदर फ्री रेस्टोरेंट है - कहकर ले जाते हैं। सामान्य मरीजों को भी ढूँढ कर लाना ऐसे कठिन होता जा रहा है जैसा बम्बू द्वीप में नसबंदी के लिए लोगों को हस्पतालों में लाना। कुछ दिन पहले डॉक्टरों ने यहाँ तक प्रस्ताव दिया था कि अगर टिम्बकटू द्वीप में मरीज कम हैं तो उन्हें बाहर से मरीज आयात करने की अनुमति दी जाए। शमसान घाटों में भारी डिस्काउंट है। पादरियों को मौत पर बोले जाने वाली प्रार्थना ही भूल गई है। दवाईयाँ गोदामों में पड़े-पड़े एक्सपायर हो जाती हैं। जिनको दवाई देते भी हैं वे भी गूगल डॉक्टर से पूछते हैं कि दवाई खानी चाहिए या नहीं। हम एशिया और अफ्रीका के द्वीपों में हो रही महामारियों के शोध पर पैसा लगा रहे हैं और इधर हमारे पास दुनिया में बेचने के लिए हथियार बनाने के पैसे की कमी पड़ रही है। इसलिए बीमारियों पर होने वाले शोध भी बंद कर दिए गए हैं। द्वीप के दूरगामी हित में है कि एक बार इसे आने दो। इसे हर्ड एफेक्ट कहा गया। उसे मतलब बताने को कहा गया तो उसने उदाहरण दिया कि आदमी गंजे कहकर कब बुलाए जाते हैं।

जब ज्यादातर लोगों के बाल हो। अगर देश ही गंजों का हो तो कौन किसका मजाक उड़ाएगा। हम सबको खोरोना करवा देंगे। पम्प के मंत्रियों ने उसे बड़ी मुश्किल से समझाया।

पम्प के पास झम्प, खम्प, लम्प जैसे दोस्त थे। उन्हें लगा खोरोना के चक्कर में उन्हें नुकसान हो जाएगा। उन्होंने पम्प को कहा कि यह चिंग चिंग की साजिश है। वह चाहता है कि खोरोना के चक्कर में हम अपनी दुकाने बंद कर दें और उनका अलीबाबा और चालीस चोर टिम्बकटू द्वीप की सारी नगदी उड़ा कर ले जाए। पम्प ने झम्प, खम्प, लम्प जैसे दोस्तों की बात मानी और वैद्यों को डाँटा और कहा कि हमें खोरोना पर नहीं अलीबाबा चालीस चोर पर नज़र रखनी है।

इधर चिंग चिंग की खोरोना टिम्बकटू पहुँच गई। वैद्यों ने तो काफी पहले से बता दिया था कि हमारी विज्ञान की बड़ी शोध दुनिया को केवल यह दिखाने के लिए है कि हम सबसे शक्तिशाली द्वीप हैं। इन पहाड़ों के नीचे मरी हुई चुहिया ही है। आजकल चिंग-चिंग का असर इतना ज्यादा है कि हमारी लेबोरिट्रीयों में पाजामें बनाने से लेकर चंद्रयान उड़ाने तक सारी परियोजनाओं पर चिंग चिंग का कब्जा है। हमारी पीजा में बेस उसी का है। हमारी आईस्क्रीम में उसी की मिठास है। हमारे धनुष के तीरों में धार चिंग चिंग से ही आती है।

एक बात और थी टिम्बकटू द्वीप के कुछ निवासी बहुत अंहकारी, बहुत लापरवाह थे। उन्हें लगा कि उनके यहाँ के सैटेलाइट चाँद और कई ग्रहों तक पहुँच गए हैं। परमाणु बम बना चुके हैं। यह कोरोना किस खेत की मूली है। वैसे भी वे चिंग चिंग द्वीप, बम्बू द्वीप और अफ्रीका स्थित झंडू द्वीप के निवासियों को गाजर मूली समझते थे। उनका विश्वास था कि कोरोना से इन द्वीपों के निवासी तो गाजर मूली की तरह खत्म हो जाएँगे पर हम जैसे टर्मिनेटरों पर इसका कोई असर नहीं पड़ने वाला। उन्हें केवल अलीबाबा चालीस चोर की चिंता सता रही थी। उनमें से कई चाहते थे बस उनके मदिरालय, वैश्यालय, जुआलय चलते रहने चाहिए। दिन में समुद्री तटों पर मस्ती होती रहे। रात में मिस टिम्बकटू बाँहों में सोती रहे। ऐसा नहीं उन्हें खोरोना के बारे में बताया नहीं गया पर पम्प की तरह उनमें खूब हवा भरी थी। वे खोराना का मजाक उड़ाते थे।

पर पम्प के इन तुगलकी फरमानों की कीमत आम लोगों को चुकानी पड़ी। देश में त्राहि-त्राहि हो गई। दुनिया के सबसे बुद्धिमान, आधुनिक माने जाने वाले द्वीप में कभी ऐसा होगा किसी ने सोचा न था। शहर के शहर वीरान थे। चीलें उड़ रही थी। बहुत ही दुखद दृश्य था।

अब तो हर जगह से खोरोना से डिंग डिंग याने डेथ की खबर आने लगी। पम्प की बातों पर जो पहले मुँह छुपा कर मुस्कराते थे। अब ठहाके मार कर हँसने लगे। पम्प ने स्थिति नियंत्रित करने की कोशिश की। उसने बताया कि वह ठेकेदार होने से पहले एक झोलाछाप वैद्य भी रहा है। उसने लोगों को देसी नुस्खे बताने शुरू किए। इसे पंप थेरेपी का नाम दिया गया। यह अपने समय की बहुत बड़ी इजाद थी। जिसके लिए मेडिसन के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार देने तक पर विचार हुआ। यह आर-पार का खेल था। उसके विचार से इस महामारी का जन्म कीटाणु से हुआ है तो बस कीटाणु मारने वाला इंजेक्शन पिछवाड़े में ठोक दो। देखते-देखते पम्प थेरेपी लोकप्रिय हो गई। जिस मरीज को पम्प थेरेपी देने की बात करते थे। वह थर-थर काँपने लग जाता था। कुछ मरीजों ने इस थेरेपी लेने की तुलना में आत्महत्या करना ज्यादा पसंद किया। उधर उसने घर की प्रयोगशाला में वैक्सीन भी विकसित करनी शुरू की। पूरा टिम्बकटू भगवान से दुआएँ कर रहा है कि वह विकसित ना हो। अगर पम्प वैक्सीन विकसित हो गई तो मरने वालों की संख्या में कम से कम कई जीरो और लग जाएँगे। पम्प

को लगता था कि ये बातें तो कामन सेंस की हैं लोगों को समझ क्यों नहीं आती! वह समय का सिकंदर था चाहे बातें वह चुकंदर वाली करता हो। वैसे सिकंदर और चुकंदर में फर्क भी कितना होता है!

उधर हाहाकार मचने लगा था सारी दुनिया में खोरोना फैल चुका था। दुनिया घरों में दुबक पर बैठ गई थी। पर टिम्बुकटू देश के नजारे अलग थे। पम्प रोज झोले से नयानुस्खा बता रहा था। लोगो ने हँसना छोड़ दिया था पर रोने की ताकत नहीं रह गयी थी। हँसते-हँसते लोग रोने लगे। हँसते-हँसते लोग मरने लगे। रोते-रोते लोग थक गए। पम्प हवा निकले हुए गुब्बारे की तरह पिचका हुआ था। कोरोना ने टिम्बुकटू की डिङ्गडिङ्ग मतलब ऐसी की तैसी कर दी थी। टिम्बुकटू द्वीप ने और दुनिया में पहली बार अपने नेता को निचुड़ा देखा। उसके झोले के सारे जोकर निकल चुके थे। वह खुद मात की बिसात पर बैठकर जोकर लग रहा था। चिंग चिंग मंद मंद मुस्करा रहा था।

इन दिनों

किशन तिवारी

गम किसे अपना सुनाएँ
मर गई सम्बेदनाएँ
जाग कर भी सो रहे जो
किस तरह उनको जगाएँ
झील है खामोश लेकिन
आज कुछ पत्थर चलाएँ
आ गये हैं साँप घर में
दूध हम उनको पिलाएँ
नीम आँगन का अभी चुप
अब चलो इसको हिलाएँ
जल चुके हैं फूस के घर
फुसफुसाती हैं हवाएँ
अर्थ भारी शब्द पर है
अब इसे कैसे बचाएँ.

?

परदेश में पतझड़

अरुणा सभरवाल

वह भी अकेला बैठा था। बिलकुल अकेला, सिकुड़ा सा। वहीं, जहाँ वो अक्सर बैठा करता है। उसी सार्वजनिक बेंच पर। जो मॉरिसन सुपमार्केट के राउंड अबाउट के पास था। वहीं बैठे-बैठे आते-जाते लोगों को निहारता रहता। उसे देखते ही जया के मन में अनेकों प्रश्न उठने लगते, कौन है? कहाँ रहता है? एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे बेंच पर बैठ कर ही पूरा दिन बिता देता है। बेंच नहीं तो एक दुकान से दूसरी दुकान पर विंडो शॉपिंग करता दिखाई देता है। लावारिस तो लगता नहीं। कपड़े तो साफ़ सुथरे पहने होते हैं। बीमार भी नहीं लगता। क्या इसको यहाँ-वहाँ बैठने के अतिरिक्त कोई काम नहीं? फिर खुद ही सवाल-जवाब करने लगती है। लगता तो अच्छे घर का है, हो सकता है कोई मजबूरी हो? या फिर पत्नी की मृत्यु हो गयी हो या फिर बहू का व्यवहार इनके साथ ठीक न हो? हो सकता है, उसे एकांत पसंद हो। सदा खोया-खोया-सा उदास ही दिखता है। हाँ उसके पास एक कपड़े का थैला ज़रूर होता है, जिसमें पानी की बोतल और एक छाता, क्योंकि लंदन में मौसम का कोई भरोसा नहीं, बारिश की सम्भावना सदा लगी रहती है।

उसका अर्थहीन, दिशाहीन घंटों इधर-उधर अकेले बैठे रहना देख कर जया की जिज्ञासा बढ़ने लगी। पल भर को उसका मन तो किया कि उनसे बात करे, फिर न जाने क्या सोच कर आगे बढ़ गयी। जैसे ही वह शॉपिंग करके सुपमार्केट से निकली, बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। सामने बेंच पर वो सज्जन बैठे थे। शायद सोच रहे होंगे इतनी बारिश में घर वापस कैसे जाऊँगा। जया को यह तो अनुमान हो चुका था कि वह यहीं-कहीं उसके घर के आस-पास ही रहते हैं, क्यूँ कि वह कई बार उन्हें इधर-उधर डोलते हुए देख चुकी थी। क्षण भर को उसका मन तो किया उनसे पूछने का कि क्या वह उन्हें कार में घर छोड़ सकती है, फिर यही सोच कर छोड़ दिया कि वेक्या सोचेंगे। आज-कल हालत ही कुछ ऐसे हैं कि आप चाह कर भी किसी की सहायता नहीं कर सकते। इसे भारतीय समाज का दकियानूसीपन मान लो या फिर संकुचित विचार, यही सोच कर उसने विचार छोड़ दिया। यूँ कहो उसकी हिम्मत ही न हुई।

अपनी हरकत से शर्मिन्दा, जया घर तो पहुँच गयी, दिन भर उसका मन अशांत रहा। कभी खुद को, कभी समाज को कोसती रही। क्यूँ समाज के भय से विरासत में मिले संस्कारों का निर्वाह नहीं कर पा रही। वह भी तो इंसान है? कैसे पैदल चल कर जाएँगे इतनी बारिश में? रात भर स्वयं को कोसते-कोसते न जाने कब उसकी आँख लग गयी। सुबह उठते ही उसने पर्दे हटा कर खिड़की से झाँका, कुरमुरी सुबह थी, कहीं-कहीं धूप के टुकड़े खिड़की से झाँक रहे थे। धूप को देखते ही उसका मन खिल उठा, उसमें एक नई स्फूर्ति का संचार होने लगा। आज उसने ठान लिया था कि अब वह समाज के प्रत्यक्ष विरासत में मिले संस्कारों को झुकने नहीं देगी।

उन सज्जन का बेंच पर बैठे रहना, एक स्टोर से दूसरे स्टोर में नाहक चक्कर लगाने का सिलसिला चलता रहा। कुछ दिन से जया का उनसे आमने-सामने टकराव नहीं हो पाया था, जिसकी उसे प्रतीक्षा थी। कुछ दिन बीत गये, सुबह का समय था जया अपनी बेटी को स्कूल छोड़ने गयी, वो भी वहीं खड़े थे। उस दिन पहली बार जया ने उन्हें करीब से देखा। वो भी किसी बच्चे को स्कूल छोड़ने आए थे। जया सोच ही रही थी, कि अचानक नमस्ते शब्द ने उसे चौंका दिया। उसने ने मुड़ कर देखा, वही सज्जन खड़े थे। जया ने भी मुस्कुराते हुए नमस्ते का उत्तर दिया।

‘आप हिंदी बोलती हैं.....?’

‘जी’ इतना सुनते ही उनके चेहरे पर खुशी की इक लहर दौड़ गयी।

वह दोनो बातें करते-करते अपने घर की ओर चल दिए। अंकल जी जया के घर से अगले ब्लाक में ही रहते थे। किसी हिंदी भाषी से मिलकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। घर पहुँचते-पहुँचते रास्ते में उन्होंने अपने बारे में बहुत कुछ बता दिया। उनका नाम तो मिस्टर कामत है। मुंबई से आए हैं। अभी-अभी रिटायर्ड हुए हैं।

बेटे को उनकी ज़रूरत थी इस लिये यहाँ हैं। लोगों से बातचीत की समस्या है। 'अँग्रेज़ी पढ़ लेता हूँ किंतु बोलने से झिझकता हूँ। विशेष रूप से अँग्रेज़ों की अँग्रेज़ी समझने और बोलने में असमर्थ हूँ। इसलिए साहस भी नहीं जुटा पाता। अँग्रेज़ी के कारण अपने पोते कर्ण के होम वर्क में भी मदद नहीं कर सकता। शिक्षा प्रणाली में भी बहुत अंतर है। गणित का होम वर्क करवा देता हूँ। उसे मेरी और मुझे उसकी भाषा बोलने का लहजा समझ नहीं आता। भाषा हमारे बीच एक स्टम्बलिंग ब्लॉक बन गयी है। टेलिविज़न भी कितना देख सकता हूँ। टेलिविज़न में भी तो अँग्रेज़ी ही बोलते हैं। इंडियन चैनल बेटे ने लिए नहीं हैं, कहता है हमारे पास देखने का समय ही नहीं है। घर का काम करने का आदी नहीं हूँ। मशीनों से डर लगता है। समय का सदुपयोग करने में स्वयं को असमर्थ पाता हूँ। अपने को बेकार समझता हूँ। खुद से ग्लानि होने लगी है। मेरा आत्मविश्वास डगमगाने लगा है। खुद को अपाहिज समझने लगा हूँ।' वह उत्तेजना में एक ही साँस में सब कुछ बोल गये। उनकी बेबसी ने सोच की पूँड़िया जया के मस्तिष्क में रख दी। जया ने उन्हें अश्वाशन देते कहा 'धीरे-धीरे रखिए अंकल जी धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।

सदा की भाँति, शुक्रवार को घर की साप्ताहिक ग़ोसरीज़ ले कर जया सूपमार्केट से घर आ ही रही थी चौराहे पर अंकल जी बैंच पर बैठे नींद के झोंके ले रहे थे। जया ने पास जा कर कहा 'अंकल जी' वह हड़बड़ा कर बोले 'माफ़ करना बस यूँ ही आँख लग गयी थी।'

'लगता है रात को नींद पूरी नहीं हुई?'

'बेटा यह तो रोज़ का ही सिलसिला है। एक बेडरूम का फ़्लैट है। बेडरूम में बेटा, बहु और पोता सो जाते हैं। मेरा बिस्तर बैठक का सोफ़ा है। टी-वी के कारण जल्दी सो भी नहीं सकता। बच्चे देर तक टी-वी देखते हैं। फिर सुबह छः बजे सब उठ जाते हैं, उन्हें सात बजे काम पर पहुँचना पड़ता है। शर्म के मारे मुझे भी उठना पड़ता है। बहु के सामने लेटा कैसे रह सकता हूँ। बेटा बहु भी मजबूर हैं। ज़ाहिर है बच्चे भी यहाँ की जद्दो-जहद में अपने पैर ज़माने की कोशिश में लगे हैं। सुना है इस इलाक़े के गवर्मेंट स्कूल भी बहुत अच्छे हैं। तभी यहाँ छोटे से फ़्लैट का किराया भी बहुत अधिक है। बच्चों की कोशिश है, बहुत सा पैसा कमा कर, वापस अपने देश जा कर स्थापित हो जाएँ।'

'तो अंकल जी, आप सब प्रबंध कैसे करते हैं?'

"बहु कर्ण के कपड़े निकाल जाती है। कर्ण को नहला कर, उसे तैय्यार करता हूँ। नाश्ते में उसे दलिया, कॉर्न फ़्लेक्स, राइस करिस्पी खिला के स्कूल ले कर जाता हूँ। बेटे ने उसका स्कूल मुझे दिखा दिया था। साढ़े तीन बजे उसे घर ला कर कर्ण को कुछ खिला देता हूँ। उसके बाद कर्ण टी-वी देखने लगता है। उसे व्यस्त रखना भी मेरे लिए बड़ी समस्या है। विशेष रूप से भाषा हमारे लिए बहुत बड़ी बाधा है। न उसे मेरी हिंदी आती है और न मुझे उसकी अँग्रेज़ी। भाषा का फ़ासला मुझे कर्ण के करीब नहीं आने देता। खुद से शर्मिन्दा होता हूँ। दोनों एक दूसरे को समझने में असमर्थ हैं। लगता है जीवन मुट्ठी से फिसलता जा रहा है। अब तो सोफ़ा और बैंच ही मेरे साथी हैं।"

उनकी बातें सुनकर जया का मन तो परेशान हुआ, उसे उनकी अकेलेपन की घुटन का एहसास होने लगा था। सोचने लगी, इस भीड़ के अकेलेपन को समझना आसान नहीं। लंदन, फ़्रान्स, अमेरिका इत्यादि पश्चिमी देशों में यह अकेलापन और भी सख्ती से जकड़ लेता है। तुम्हें लगने लगता है कि मानों, तुम्हें चाँद पर किसी ने बेसहारा, मजबूर और दिशाहीन अकेला छोड़ दिया है जहाँ एक-एक दिन एक-एक पल, गिन-गिन कर गुज़रता है। ऐसी स्थिति में दोषी ठहराये तो किसे ठहराये?' यह जया भी नहीं जानती थी। उसने

अंकल जी को विश्वास दिलाया और कहा 'आप चिंता न करें मैं तुरंत ही आपको हिंदी भाषा-भाषी लोगों से मिलवाऊंगी। आपको भी अच्छा लगेगा।' अब उन्हें जया के घर का पता लग चुका था। कभी-कबार वह जया के घर आधे घंटे के लिये आ जाते। जया ने उन्हें कुछ लोगों से भी मिला दिया। जया खुश थी कि आजकल अंकल जी थोड़े व्यस्त रहने लगे थे। उनका बैंच पर बैठे रहना, नाहक एक दुकान से दूसरी दुकान में फिरते रहने का सिलसिला चलता रहा।

उस दिन जया ने जैसे ही घर का काम समाप्त किया, उसने बाहर झाँक कर देखा, अचानक पतझड़ की धुंध न जाने कहाँ गायब हो गयी थी। पतझड़ की मरियल सी धूप के कुछ टुकड़े पैटीओ के शीशों से भीतर झाँक रहे थे। वह बाहर निकली उसने प्रकृति का अद्भुत दृश्य देखा, लगभग सभी वृक्ष वस्त्रहीन खड़े शर्मा रहे थे। धरती माँ पर पड़े खूबसूरत लाल, संतरी, पीले रंग-बिरंगे पत्तों का बिछा कालीन पतझड़ की शोभा को और बढ़ा रहे थे। वह वहीं खड़ी प्रकृति के नज़ारों को निहारने लगी, मौसम भी निखरने लगा था। जया ने सोचा बहुत अच्छा अवसर है गार्डन साफ़ करने का। उसने गार्डन रेक से घास पर पड़े पत्तों को समेटना आरम्भ कर दिया। उसने सूखे पत्ते एकत्र कर के खाद बनाने वाले ड्रम में डाल दिये। धूप की तपिश से अब तक तो घास भी सूखने लगा था। सोचने लगी क्यों न पतझड़ की आखिरी घास काट ली जाए। कल गार्डन के घास उठाने वाले ले भी जाएँगे। उसने काटा हुआ घास हरे बिन में डाल कर गेट के बाहर रखा ही था, कि अचानक पीछे से आवाज़ आयी 'गुड आफ़्टरनून जया' उसने मुड़ कर देखा और बोली 'गुड आफ़्टरनून अंकल जी, जीतू के जा रहे हो?'

'नहीं वह तो दफ़्तर गया है, काम वालों ने काम पर तो जाना है। बहुत अच्छा लड़का है। हाल-चाल पूछ लेता है। कभी-कभी उसके साथ बैठ कर एक बीयर भी पी लेता हूँ। मुझे एक दो बार बाहर ले गया है।' 'आइएअंदर आइए,बैठिये।' कितनी देर तक अंकल जी सोफ़े पर गुम-सुम बैठे रहे। उनके चेहरे पर एक गहरी उदासी छाई हुई थी, परेशान करने वाली उदासी। जया उनके पास जा कर बैठ गयी, उसने दो-तीन बार पूछने का प्रयास किया। वह भाव शून्य से अपने मौन को तोड़ने में गड़बड़ा रह थे। जया के मन में उलटे-सीधे विचार उठने लगे। वह चिंतित थी उसके पास तो अंकल जी के बेटे का फ़ोन नम्बर भी नहीं था कि उसे बता सके।

जया ने स्नेहिल भाव से पूछा 'अंकल जी आज ...मूड ख़राब है क्या? इतने उदास क्यों हैं? जब से आए हैं गुम-सम से बैठे हैं? सब ठीक तो है?' अंकल जी चुपचाप बैठे रहे। कुछ पल सम्वादहीन गुज़रे, वह उनकी चुप्पी में अर्थ ढूँढने लगी, फिर बोली 'अंकल जी अगर आप बताएँगे नहीं तो, मैं आपकी सहायता कैसे कर सकती हूँ। प्लीज़ ...आप बेटी समझ कर बेझिझक मुझे बता सकते हैं।'।

'अब क्या बताऊँ' कह कर उनकी आँखों में आँसू तैरने लगे। एक गहरी साँस ले कर स्वयं को सँभालते बोले 'मेरे लिये यहाँ समय का चार-पाँच घंटे का आगे-पीछे होने का अंतर भी बड़ी उलझन पैदा कर देता है। एक घंटे पहले ही बड़ी मुश्किल से कमला (पत्नी) से बात हो पायी थी। बड़ी परेशान थी। कह रही थी कि अकेले परिवार सँभालना उसके लिए सम्भव नहीं है। बड़े बेटे और बेटी के पास समय नहीं है, छोटों दोनों बच्चों की ज़रूरतें बढ़ रही हैं। सम्भव हो तो शीघ्र आने का प्रयास करें। समझ में नहीं आता क्या करूँ! उम्र भर नौकरी करता रहा सोचा था अवकाश के बाद पत्नी को चारों धाम ले कर जाऊँगा, इस जन्म में तो अब सम्भव नहीं लगता। उलझा-उलझा सा रहता हूँ। समझ नहीं पा रहा क्या करूँ।'।

'अंकल जी, जब आप मुंबई वापिस जाएँगे तब प्रोग्राम बना लेना' जया ने सुझाव देते कहा। 'इस जन्म में तो असम्भव ही लगता है, जीवन का क्या भरोसा। अगले साँस तक का भरोसा नहीं। क्यों कि जब मैं वापस जाऊँगा, पत्नी को यहाँ आना पड़ेगा, अब तो मैं जाऊँगा तो वह आएगी, यही सिलसिला चलता रहेगा, जब तक कर्ण बड़ा नहीं हो जाता।'।

'आप बेटे से बात तो कर के देखो, शायद कोई हल निकल आए?'

‘क्या बात करूँ, उसके पास समय ही नहीं है। नया-नया आया है। पैसा कमा कर मकान लेना चाहता है। दोनो अपने पाँव ज़माने में लगे हैं।’ कहते-कहते उनका गला रूँध गया। अंदर की उदासी बाहर दिखने लगी। उनका स्वर इस तरह भर आया कि वह दूसरी ओर देखते बोले ‘औलाद कितनी बड़ी मजबूरी है, कुछ भी करवा सकती है। सबको समाज की लकीरों पर चलना पड़ता है।’ चाय तो क्या पीनी थी, वह अपने आँसू पीते रहे। कुछ पल के पश्चात्, वह बिना कुछ कहे, चुप-चाप उठ कर चले गये। जया एक और उलझन में पड़ गयी। आज उनके लिए जया के शब्द अपने अर्थ खो चुके थे। जया उनके आत्म-विश्वास को और गिरते हुए नहीं देख सकती थी। उनकी बातों से जया चिंतित थी। ऐसी स्थिति उसके समक्ष पहली बार नहीं आयी थी। इस से पहले भी वह ऐसी स्थिति में फँसे, कई लोगों से मिल चुकी थी जिन्हें उनके जवान बच्चों ने अपने बच्चों की देख-रेख के लिये परदेस में बुला तो लिया था। फिर उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया था। उन्हें नये देश, नया वातावरण, नयी भाषा से उपजी कई कठनाइयों से जूझना पड़ा। जया के पास उन समस्याओं का कोई हल नहीं था। अब प्रश्न यह उठता है कि उन परेशानियों को कम कैसे किया जा सकता है। उम्र भर सोशल सर्विसेज़ में सोशल वर्कर रह कर, जया को सभी सुविधाओं की जानकारी थी जो लंदन और सभी पश्चिमी देशों में सीनियर सिटिज़ेन के लिये निशुल्क उपलब्ध थीं।

दूसरे दिन जया ने अंकल जी को अपने बेटे से बीस पाउंड ले कर दस बजे टेस्को में मिलने को कहा। सबसे पहले उनका ओएस्टर कार्ड बनवाया। जिसे वह बस और अंडरग्राउंड में जब चाहें, इस्तेमाल कर सकते हैं, और कभी भी - कहीं भी जा सकते हैं। उसी कार्ड से वह दोनो बस से हैरो की हायी स्ट्रीट पहुँचे, ताकि उन्हें कार्ड इस्तेमाल करने की विधि आ जाए। हैरो के फूड हॉल में हिंदी भाषा-भाषी हम उम्र लोगों से मिलाया जो क़रीब रोज़ ही सर्दी से बचने, रौनक़ देखने और अपना समय बिताने के लिए वहाँ बैठे रहते हैं। कभी-कभी ताश की बाज़ी भी लगा लेते हैं। सभी ने मुस्कुरा कर उनका स्वागत किया। जया उन्हें एक घंटे के लिए उनके हमउम्र साथियों के साथ छोड़ कर अपना काम करने चली गयी। उसके पश्चात् लाइब्रेरी जहाँ पर सभी भाषाओं के दैनिक अख़बार उपलब्ध होते हैं, अगर कोई विशेष पुस्तक चाहिए, वह मँगवा भी देते हैं। लोगों से मिलने से परस्पर मेल-जोल बढ़ता है। लाइब्रेरी में मुफ़्त में योगा, लेखन, और भाँति-भाँति कि कक्षाएँ लगती हैं, वहाँ से जया ने उनके बेटे के लिए बहुत से लाभदायक लीफ़्लेट उठाये। अंकल जी बहुत चकित थे। उसके पश्चात् जया उन्हें स्थानीय चर्च में ले गयी। इस चर्च में सप्ताह में बारह बजे से दो बजे तक दो दिन कॉफ़ी मोर्निंग होती है। वहाँ सभी धर्मों के लोगों का स्वागत है और अपने-अपने विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता है। सामाजिक मुद्दों पर रोशनी डाली जा सकती है। निशुल्क। पर यदि आपका मन करता है तो डिब्बे में कुछ पेन्स डाल सकते हैं। उसने उन्हें बताया की यह सुविधा तो उस चर्च में भी है जहाँ वह रहते हैं। किसी-किसी चर्च में दिन के लंच का भी प्रबंध होता है। चर्च में सबने मुस्कुराहट से उनका स्वागत किया, अपना-अपना परिचय दिया। वहाँ भी जया उन्हें आधे घंटे के लिए उनके हम-उम्र लोगों के पास छोड़ कर अपना काम करने चली गयी, ताकि वह सम्पर्क बना सकें। रास्ते भर अंकल जी उनकी उदारता को सराहते रहे।

जया ने पूछा ‘अंकल जी, कैसा रहा? कोई दोस्त-वोस्त बनाया कि नहीं?’

‘एक ने नहीं सभी ने अपना फ़ोन नम्बर दे दिया है, और कहा है जब भी आपका मन उदास हो आप किसी समय भी फ़ोन कर सकते हैं। हम सभी सप्ताह में एक दिन शाम को पब में जाते हैं, यदि आप जाना चाहें तो आ सकते हैं। कामत, तुम भाग्य शाली हो, छः महीने में वापस चले जाओगे, हमें तो यहीं रहना है। उनकी बातों से मुझे यह एहसास हुआ की यहाँ पर सभी अकेलेपन के शिकार है। जया तुमने ग़ौर किया होगा दो-तीन सज्जन तो अपनी ट्रोल्ली ले कर आये थे। उन्होंने बताया....बहू बेटे के काम पर जाते ही वह अपने पूरे दिन के खाने पीने का सारा प्रबंध करके अपने साथ लाते, एक तो यहाँ पैसे नहीं खर्चने पड़ते, दूसरा सर्दी से बच जाते हैं। घर की हीटिंग तो बहू ने टाइमर पर लगा रखी है, गैस का मामला है। हाथ लगाते भी डर लगता है। बच्चे भी खुश मैं भी अपनों में खुश। हैरान हूँ कि इन सब सुविधाओं का खर्चा कौन उठाता है? चर्च या फिर

आने-जाने वाले लोग ? हाँ, उन्होंने मुझे स्टेशन पर ले जा कर ओएसटेर में पैसे चैक करना तथा उसे टॉप अप करना भी सिखा दिया।'

स्कूल से बच्चों को घर लाने का समय हो गया था। अगले सप्ताह जया ने कुछ और संस्थाओं में जाने का प्रोग्राम बनाया। दूसरे दिन, सबसे पहले जया उन्हें लेज़र सेंटर ले गयी जहाँ योग, स्विमिंग, वॉटर एरोबिक, जूमब्बा इत्यादि सिखाया जाता है। फिर सिटिज़ेन एडवाइज़ ब्यूरो में गये जहाँ नागरिकों के लिये सभी सेवाएँ निशुल्क दी जाती हैं। जया ने घड़ी देखी तीन बजने को थे। घर जाने का समय हो गया था। रास्ते में जया ने अंकल जी से कहा 'अब एक दो बार आप स्वयं हैरो घूम कर आना, बाक़ी अगले सप्ताह के लिए छोड़ते हैं।' तीन दिन बाद अंकल जी का फ़ोन आया, आवाज़ से खुश लग रहे थे, उन्होंने बताया कि वह दो बार अकेले हैरो घूम कर आये हैं, कुछ लोगों से भी मिले, अच्छा लगा, धन्यवाद। आज उनका प्रोग्राम आस-पास की जगहों को देखना था। सबसे पहले जया उन्हें आर्ट सेंटर ले गयी। वहाँ शोज़ होते हैं। क्लास होती है। डान्स-गाना भी सिखाया जाता है, वहाँ कैफ़े भी है। फिर चैरिटी शॉप दिखायी और बताया, अगर वह चाहें तो वह भी यहाँ दो-चार घंटे के लिये अपनी सेवा का योगदान कर सकते हैं। उसके पश्चात् उनके इलाक़े का चर्च दिखाया जहाँ मंगल बार को बारह से दो बजे मिलने का समय है। उसके बाद स्थानीय पार्क दिखाया जहाँ रंग बिरंगे फूलों के साथ-साथ जिम का भी प्रावधान है। वहाँ कई प्रकार की मशीनें लगीं हैं। जया ने उन्हें एक लिस्ट दी जिसमें उसने अन्य सुविधाओं के बारे में बताया। जैसे पेंशनर के लिये रिंग एंड राइड सर्विस है, अगर आपने शॉपिंग करने जाना है तो आप उन्हें फ़ोन करें तो वह आपको ले भी जाएंगे और घर वापस भी ले आयेंगे। फिर एज यूके, उन्हें फ़ोन करके अनेक सुविधाओं की जानकारी ली जा सकती है। शेष गूगल भाई साहब तो हैं ही।

अंकल जी की ओर से जया अब निश्चिन्त हो गयी थी। अब वह इधर-उधर डोलते कम दिखायी देते थे काफ़ी सक्रिय हो गये थे। वह खुश थी। किंतु अभी तक वह समझ नहीं पायी थी कि अपने ही बच्चे इतने स्वार्थी कैसे हो जाते हैं कि माँ-बाप को अवकाश मिलते ही वह उन्हें अपने बच्चों की देखभाल के लिये परदेस में बुला लेते हैं। ऐसी स्थिति में माँ-बाप को अपनी सभी योजनाएँ रद्द करके परदेस में आना पड़ता है। उनके जीवन के मायने ही बदल जाते हैं। माँ-बाप अपने कर्तव्य के एहसास से मना तो नहीं कर सकते। कई बच्चे भी यही सोचते हैं यह उनके माँ-बाप का दायित्व है। यहाँ आ कर माँ-बाप को लगता है वह एक अजनबी संसार में खो गए हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या सचमुच यह उनका दायित्व है या उन पर थोपा गया है। यह तो प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि वह उसे किस एंगल से देखता है। यहाँ पहुँच कर उनके लिए नया देश, नया वातावरण, नयी संस्कृति के साथ-साथ नयी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वह खुद को चाँद पर अकेला खड़े पाते हैं। दोषी ठहराए तो किसे ? वह खुश थी कि आजकल अंकल जी दिखायी नहीं देते। उन्होंने अपने सम्पर्क स्थापित कर लिए थे।

बड़े दिनों के बाद आज अंकल जी हाई स्ट्रीट पर अपने परिवार के साथ दिखायी दिए। बहुत नये-नये लग रहे थे। गुलाब सा खिला चेहरा। उनकी आँखों में पीड़ा की प्रतिछाया नहीं, खुशी का नूर, दूर से ही दिखायी दे रहा था। होंठ तो होंठ उनकी आँखें भी मुस्कुरा रही थीं। मायूसी की लकीरें न जाने कहाँ गुम हो गयी थीं। अब अंकल जी वो अंकल जी नहीं थे। उनका पूरा ट्रैन्स्फ़ॉर्मेशन हो चुका था। उनके चेहरे पर फैली मुस्कान संदेशा दे रही थी कि भीतर से आज उनका मन चहक-महक रहा है। उनके पास से गुज़रती हवा भी गुनगुना रही थी। जया से रहा नहीं गया उसने मुस्कुराते हुए उनसे पूछ ही लिया - 'क्या बात...है अंकल जी ? आज तो खुशी चेहरे से झलक रही है।'।

वह मुस्कुराते हुए बोले 'ठीक कह रही हो बेटा मैं आज बहुत खुश हूँ।'।

'क्यूँ अंकल जी, ऐसा क्या हो गया ?'

'कल मैं घर जा रहा हूँ।'

नचिकेता !

डॉ. नूतन पाण्डेय

मुझे करना है आज तुमसे सीधा संवाद,
हाँ, सीधा संवाद ।
क्योंकि बेचैन हूँ मैं, उद्वेलित भी
उतनी ही शायद
जितने बेचैन और उद्वेलित थे तुम कभी
शांत करने को अपनी जिज्ञासा, मृत्यु के देव से ।
कठोपनिषद कहता है, भूखे प्यासे पड़े रहे थे तुम तीन दिन यम के द्वार पर
जिसके बदले में मिले थे तुम्हें तीन वरदान ।
और प्रत्युत्तर में जानना चाहा था तुमने मृत्यु का शाश्वत रहस्य ।
आत्मा – परमात्मा के मिलन का रहस्य,
वो रहस्य, जिसे नहीं जान सकते योगी, परम योगी भी ।
प्रत्यक्ष या अनुमान से निर्णय नहीं कर सकते उस आत्मतत्त्व का ।
नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुधा श्रुतेन
और नेति-नेति कहकर खोजते रहते हैं ताउम्र ।
तुम्हारी भी तो इच्छा थी खोजना अग्नि विद्या का वो रहस्य,
जिसे जानकर प्राप्त किया जा सकता है स्वर्ग ।
इच्छुक थे तुम भी तो यह जानने को कि मर्त्य शरीर कहाँ जाता है मृत्यु के बाद ?
लेकिन समझ नहीं आया मुझे,
क्या कारण रहा होगा तुम्हारी इस जिज्ञासा का !
क्या इतने व्यथित हो गए थे तुम अपने पिता वाजश्रवा के मिथ्याभिमान से
जो पाना चाहता था परमपद,
क्षीण, दुर्बल, अदुग्धा गायों के बदले,
या फिर छलनी हो गया था तुम्हारा हृदय
जब उन्होंने क्रोध में भरकर दान कर दिया था तुम्हें यमराज को ।

तभी शायद मोहभंग हो गया था तुम्हारा
 क्षणभंगुर इस जीवन और जीवन सम्बंधों से
 लेकिन क्या तुमने यह नहीं सोचा ?
 कि किसी को नहीं है जरूरत यह जानने की
 कि मृत्यु के बाद क्या होता है ?
 बल्कि जानना चाहते हैं सब क्या है ये जीवन !
 कहाँ से आते हैं हम सब ?
 कोई क्यों भोगता है स्वर्ग के सुख?
 और किसी को क्यों नहीं मिलती दो जून की रोटी ?
 क्यों अंश-अंश में हर रोज मरते हैं सब?
 तुम तो उत्सुक थे जानने को मृत्यु के बाद का सच
 और करना चाहते थे ग्यारह दरवाजों वाले नगर से ब्रह्म का ज्ञान और दर्शन ।
 पर पता नहीं क्यों नहीं जानना चाहा तुमने
 इस जीवन का वह कटु सत्य
 जो भोगता है मनुष्य यहीं जीते जी, जीकर हर पल, हर क्षण ।
 आश्चर्य है, न तो जीवन का सौन्दर्य खींच पाया तुम्हें अपनी ओर
 जिसमें बहता है सृष्टि का उद्दाम वेग,
 जिससे बँधकर होती है अद्भुत सर्जनाएँ
 और न ही जीवन की विसंगतियाँ पर ध्यान गया तुम्हारा कभी
 जिसमें भटकता रहता है प्राणी और खोजता रहता है उनसे निकलने का मार्ग ताउम्र ।
 गीता में लिखा है आत्मा मरती नहीं, मरता है शरीर
 पर क्या तुम्हें नहीं लगा कि आत्माएँ ही मरती हैं
 और जिन्दा तो रहते हैं केवल शरीर निष्प्राण पुतलों की तरह घूमते यहाँ से वहाँ ।
 मुझे तो, हाँ सच, मुझे तो लगता है
 कि तुमने शायद भोगा ही नहीं होगा ये सब
 जिसे भोगते आये हैं हम सब हर घड़ी, हर पल
 तभी तो तुमने नहीं जानना चाहा, इस जीवन का वह कटु, शाश्वत और अनिवार्य रहस्य
 और उसकी पर्त दर पर्त, जिसे खोलना, जिसे जानना
 मृत्यु के रहस्य को जानने से भी दुष्कर है
 और शायद असम्भव भी !

एक पाठ ऐसा भी

संजय भारद्वाज

मनुष्य का जीवन घटनाओं का संग्रह है। निरंतर कुछ घट रहा होता है। इस अखंडित घट रहे को हरेक अपने दृष्टिकोण से ग्रहण करता है। मेरे जीवन में घटी इस सामान्य-सी घटना ने असामान्य सीख दी। यह सीख आज भी पग-पग पर मेरा मार्गदर्शन कर रही है।

वर्ष १९८६ की बात है। बड़े भाई का विवाह निश्चित हो गया था। विवाह जयपुर से करना तय हुआ। जयपुर में हमारा मकान है जो सामान्यतः बंद रहता है। पुणे से वहाँ जाकर पहले छोटी-मोटी टूट-फूट ठीक करानी थी, रंग-रोगन कराना था। पिता जी ने यह मिशन मुझे सौंपा। मिशन पूरा हुआ।

४ दिसम्बर का विवाह था। कड़ाके की ठंड का समय था। हमारे मकान के साथ ही बगीची (मंगल कार्यालय) है। मेहमानों के लिए वहाँ बुकिंग थी पर कुटुम्ब और ननिहाल के सभी परिजन स्वाभाविक रूप से घर पर ही रुके। मकान काफी बड़ा है, सो जगह की कमी नहीं थी पर इतने रजाई, गद्दे तो घर में हो नहीं सकते थे। अतः लगभग आधा किलोमीटर दूर स्थित सुभाष चौक से मैंने २० गद्दे, २० चादरें और २० रजाइयाँ किराये पर लीं।

उन दिनों सायकलरिक्षा का चलन था। एक सायकलरिक्षा पर सब कुछ लादकर बाँध दिया गया। दो फुट ऊँचा रिक्षा, उस पर लदे गद्दे-रजाई, लगभग बारह फीट का पहाड़ खड़ा हो गया। जीवन का अधिक समय पुणे में व्यतीत होने के कारण इतनी ऊँचाई तक सामान बाँधना मेरे लिए कुछ असामान्य था।

पर असली असामान्य तो अभी मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। रिक्षेवाला सायकल पर सवार हुआ और मेरी ओर देखकर कहा, "भाईसाब बेठो!" मेरा मंथन चल रहा था कि इतना वज़न यह अकेली जान कैसे हॉकेगा! वैसे भी रिक्षा में तो तिल रखने की भी जगह नहीं थी सो मैं रिक्षा के साथ-साथ पैदल चलूँगा। दोबारा आवाज़ आई, "भाईसाब बेठो!" इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से मैं आश्चर्यचकित हो गया। "कहाँ बैठूँ?" मैंने पूछा। "ऊपरली बैठ जाओ", वह ठेठ मारवाड़ी में बोला। फिर उसने बताया कि वह इससे भी ऊँचे सामान पर ग्राहक को बैठाकर दस-दस किलोमीटर गया है। यह तो आधा किलोमीटर है। "भाईसाब डरपो मनि। कोन पड्स्यो। बेठो तो सही।" मैंने उसी वर्ष बी.एससी. की थी। उस आयु में कोई चुनौती दे, यह तो मान्य था ही नहीं। एक दृष्टि डाली और उस झूलते महामेरु पर विराजमान हो गया। ऊपर बैठते ही एक बात समझ में आ गई कि चढ़ने के लिए तो मार्ग मिल गया, उतरने के लिए कूदना ही एकमात्र विकल्प है।

रिक्षावाले ने पहला पैडल लगाया और मेरे ज्ञान में इस बात की वृद्धि हुई कि जिस रजाई को पकड़कर मैं बैठा था, उसका अपना आधार ही कच्चा है। अगले पैडल में उस कच्ची रस्सी को थामकर बैठा जिससे सारा जखीरा बँधा हुआ था। जल्दी ही आभास हो गया कि यह रस्सी जितनी दिख रही है, वास्तव में अंदर से है उससे अधिक कच्ची। उधर गड्डों में सड़क इतने कलात्मक ढंग से धँसी थी कि एक गड्ढे से बचने का मूल्य दूसरे गड्ढे में प्रवेश था। फलतः हर दूसरे गड्ढे से उपजते झटके से समरस होता मैं अनन्य यात्रा का अद्भुत आनंद अनुभव कर रहा था।

यात्रा में बाधाएँ आती ही हैं। कुछ लोगों का तो जन्म ही बाधाएँ उत्पन्न करने के लिए हुआ होता है। ये वे विघ्नसंतोषी हैं जिनका दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर ने मनुष्य को टाँग दूसरों के काम में अड़ाने के लिए ही दी है। सायकलरिक्षा मुख्य सड़क से हमारे मकानवाली गली में मुड़ने ही वाला था कि गली से बिना ब्रेक की सायकल

पर सवार एक विघ्नसंतोषी प्रकट हुआ। सम्भवतः पिछले जन्म में भागते घोड़े से गिरकर सिधारा था। इस जन्म में घोड़े का स्थान सायकल ने ले लिया था। हमें बायीं ओर मुड़ना था। वह गली से निकलकर दायीं ओर मुड़ा और सीधे हमारे सायकलरिक्षा के सामने। अनुभवी रिक्षाचालक के सामने उसे बचाने के लिए एकसाथ दोनों ब्रेक लगाने के सिवा कोई विकल्प नहीं था।

मैंने जड़त्व का नियम पढ़ा था, समझा भी था पर साक्षात् अनुभव आज किया। नियम कहता है कि प्रत्येक पिण्ड तब तक अपनी विरामावस्था में एकसमान गति की अवस्था में रहता है जब तक कोई बाह्य बल उसे अन्यथा व्यवहार करने के लिए विवश नहीं करता। ब्रेक लगते ही मैंने शरीर की गति में परिवर्तन अनुभव किया। बैठी मुद्रा में ही शरीर विद्युत गति से ऊपर से नीचे आ रहा था। कुछ समझ पाता, उससे पहले चमत्कार घट चुका था। मैंने अपने आपको सायकलरिक्षा की सीट पर पाया। सीट पर विराजमान रिक्षाचालक, हैंडल पर औंधे मुँह गिरा था। उसकी देह बीच के डंडे पर झूल रही थी।

सायकलसवार आसन्न संकट की गम्भीरता समझकर बिना ब्रेक की गति से ही निकल लिया। मैं उतरकर सड़क पर खड़ा हो गया। यह भी चमत्कार था कि मुझे खरोंच भी नहीं आई थी...पर आज तो चमत्कार जैसे सपरिवार ही आया था। औंधे मुँह गिरा चालक दमखम से खड़ा हुआ। सायकलरिक्षा और लदे सामान का जायज़ा लिया। रस्सियाँ फिर से कसीं। अपनी सीट पर बैठा। फिर ऐसे भाव से कि कुछ घटा ही न हो, उसी ऊँची जगह को इंगित करते हुए मुझसे बोला, "बेठो भाईसाब।"

भाईसाहब ने उसकी हिम्मत की मन ही मन दाद दी लेकिन स्पष्ट कर दिया कि आगे की यात्रा में सवारी पैदल ही चलेगी। कुछ समय बाद हम घर के दरवाज़े पर थे। सामान उतारकर किराया चुकाया। चालक विदा हुआ और भीतर विचार की श्रृंखला चलने लगी।

जिस रजाई पर बैठकर मैं ऊँचाई अनुभव कर रहा था, उसका अपना कोई ठोस आधार नहीं था। जीवन में एक पाठ पढ़ा कि क्षेत्र कोई भी हो, अपना आधार ठोस बनाओ। दिखावटी आधार औंधे मुँह पटकते हैं और जगहँसाई का कारण बनते हैं।

आज जब हर क्षेत्र विशेषकर साहित्य में बिना परिश्रम, बिना कर्म का आधार बनाए, जुगाड़ द्वारा रातों-रात प्रसिद्ध होने या पुरस्कार कूटने की इच्छा रखनेवालों से मिलता हूँ तो यह पाठ बलवत्तर होता जाता है।

अखंडित निष्ठा, संकल्प, साधना का आधार सुदृढ़ रहे तो मनुष्य सदा ऊँचाई पर बना रह सकता है। शव से शिव हो सकता है।



बाधाओं पर विचार

आचार्य धर्म शास्त्री

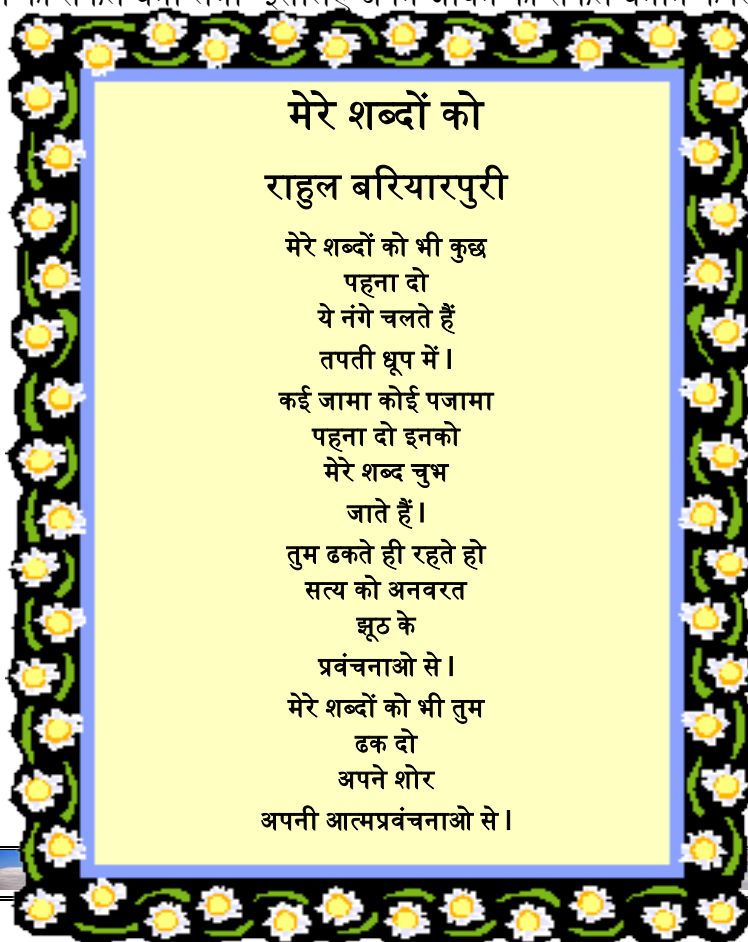
बाधाओं पर विचार करें। परंतु उन बाधाओं के समाधान पर और अधिक सोच-विचार करें।

संसार में बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ तो कम करते हैं और अपने आलस्य, प्रमाद, कामचोरी, जिद्दीपन आदि दोषों के कारण बहाने अधिक बनाते हैं और कार्य कम करते हैं अर्थात् कि - क्या करें जी, यह बाधा है, यह कठिनाई है, यह समस्या है, कोई समाधान दिखता नहीं, कोई सहयोग देता नहीं, पता नहीं आगे क्या होगा? इत्यादि।

आप के कार्य में जो-जो बाधाएँ या कठिनाइयाँ आती हैं, उन पर विचार तो अवश्य करें। क्योंकि जब तक कठिनाइयों पर विचार नहीं करेंगे, तब तक उन्हें दूर नहीं कर पाएँगे। बाधाओं या कठिनाइयों को दूर किये बिना आप अपने कार्य में सफल नहीं हो पाएँगे। इसलिए बाधाओं पर विचार करना तो आवश्यक है।

परंतु हम कहना यह चाहते हैं कि जितना विचार, चिंतन आप बाधाओं के सम्बन्ध में करते हैं, उससे अधिक विचार-चिंतन उनके समाधान पर करना चाहिए।

बाधाओं को सोचने में अपनी २५% शक्ति लगाएँ। और उनके समाधान ढूँढने तथा पुरुषार्थ करने में ७५% शक्ति लगाएँ। यदि आप ऐसा कर लेंगे, तो निश्चित रूप से आपको अपने कार्य में सफलता मिलेगी। और उस सफलता की प्राप्ति से आपके जीवन में आनंद, उत्साह, निर्भयता उत्पन्न होगी। आप बड़े आनंद के साथ बाधाओं को पार करते हुए अपने जीवन को सफल बना लेंगे। इसलिए अपने जीवन को सफल बनाने के लिए यह कला अवश्य ही सीखनी चाहिए।



राष्ट्रदेवो भवः

पूनम राजपुरोहित मानवताधर्मी

(भारतीय जनसंघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री)

‘कोरोना वायरस’ युद्ध में प्रधानमंत्री मोदी को अभूतपूर्व जनसमर्थन रूपी भारतीय राष्ट्रवाद देख विश्व अचम्भित! दुनिया मोदी को उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता, त्वरित एवं कठोर निर्णय की बेजोड़ क्षमता के चलते सर्वश्रेष्ठ नेता मानने को हुई मजबूर!

ऊभरते मजबूत भारत के लिये पुलिस की लठ्ठमार, गुण्डाई, स्वच्छंद एवं उद्दंड छवि गम्भीर चिन्ताजनक पहलू।

‘कोरोना वायरस’ ने एक झटके में ही मानव जाति द्वारा चाँद व मंगल पर बस्तियाँ बसाने जैसी सभी वैज्ञानिक उपलब्धियों, सामाजिक विकास, ढाँचागत सफल व्यवस्थाओं के निर्माण तथा आपदा नियंत्रण में सक्षमता आदि दावों को धराशायी कर दिया है। अमेरिका, चीन, इंग्लैंड जैसे शक्तिशाली देश कोरोना वाइरस से भयाक्रांत होकर घुटनों के बल आ खड़े हुए हैं। भारत की स्थिति भी कमोबेश वैसी ही है, फलतः केन्द्र एवं राज्य सरकारों को अघोषित आपातकाल स्तर पर युद्ध स्तरीय ‘लाकॅडाउन’ जैसे कठोर कदम उठाने पड़े हैं।

सौभाग्य से वर्तमान में भारत को नेतृत्व के रूप में नरेन्द्र भाई मोदी जैसा दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कठोर, दूरदर्शी व त्वरित निर्णय लेने में बेजोड़ सक्षमता वाला प्रधानमंत्री मिला हुआ है। कोरोना वाइरस के इस वैश्विक संकटकाल में प्रधानमंत्री मोदी की राष्ट्रहित सर्वोपरि रूपी असंदिग्ध प्रतिबद्धता एवं छवि ने उनके घोर राजनैतिक विरोधियों तक को साथ खड़े होने को मजबूर कर दिया है। प्रधानमंत्री के पहले एक दिवसीय जनता कर्फ्यू तथा बाद में २१ दिवसीय ‘लाकॅडाउन’ की अपील व आदेश को देश की सम्पूर्ण जनसाधारण, सभी राजनैतिक दलों तथा समस्त धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, व्यापारिक आदि संगठनों का अभूतपूर्व समर्थन मिला है। प्रधानमंत्री के प्रति इस अभूतपूर्व विश्वास, समर्थन एवं एकजुटता को नयी ‘राष्ट्रीय शक्ति अथवा पूँजी’ का उदय कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगा।

कोरोना को काबू करने के लिए व्यक्तियों के मध्य आपसी दूरी रखना ही एकमात्र कारगर उपाय होने के कारण सरकारों के सामने यकायक ‘लाकॅडाउन या कर्फ्यू’ के अतिरिक्त अन्य विकल्प नहीं था। देश की जनसाधारण स्वयं, समाज एवं राष्ट्र हित में लाख प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए भी ‘लाकॅडाउन’ का पालन करती नजर आ रही है। परन्तु रेल, बस सहित सभी प्रकार के परिवहन सेवाओं के अचानक बंद हो जाने से दिहाड़ी मजदूरी करने वाले, फेरी व रेहड़ी वाले, प्रदेशों में दैनिक मजदूरी पर निर्भर वर्ग, घुमन्तु जातियाँ, पर्यटन, शिक्षा व व्यवसायिक भ्रमण पर गये लोगों के सामने अपने घर तक पहुँचने का गम्भीर संकट खड़ा हो गया है। करोड़ों जनमानस का पूरे देश में बहुत बड़ा तबका है जो यहाँ-वहाँ अनिश्चितता में गया है। उन्हें समुचित व सुचारू रोटि, कपडा, मकान एवं चिकित्सा तक मिलना दूर की कौड़ी हो गई है। ऐसे लोगों के लिए कई दिनों बाद अब जाकर भोजनादि कुछ-कुछ स्थानीय स्तर पर सामाजिक संगठनों के प्रयास सामने आने लगे हैं।

कोरोना से देश को बाहर निकालने हेतु प्रधानमंत्री मोदी की सजगता, परिश्रम और प्रयास अतुलनीय है तथा देश में सभी दलों की राज्य सरकारें भी पूरजोर ईमानदार प्रयास कर रही है। यह संकट की घड़ी भारत के

लिए कई शुभ संदेश भी लायी है। देश की जनसाधारण का इस आपदा काल में एकजुटजा से केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रयासों में सकारात्मक भूमिका व योगदान लिए हर क्षण तत्पर खड़ा होना सुखद है। परन्तु देश में सर्वत्र दैनिक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति, अति महत्वपूर्ण सेवाओं के संचालन तथा कानून व व्यवस्था बनाये रखने की नीति सम्बन्धित केन्द्र एवं राज्य सरकारों के मध्य स्पष्ट दिशा-निर्देशों तथा समन्वय के अभाव के चलते जनता के अन्दर एक अदृश्य आक्रोश पनपने अथवा पनपाये जाने के प्रयासों से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। आज चाहे राष्ट्रीय हित में अथवा नैतिक मजबूरी में सभी विपक्षी राजनैतिक दल प्रधानमंत्री के साथ खड़े नजर आ रहे हैं परन्तु इन्हीं के द्वारा भविष्य में इन व्यवस्थागत आपदा प्रबन्धनों को विफल साबित कर बढ-चढकर विवेचन किया जाना भी निश्चित है। कोई बड़ी बात नहीं कि “धारा-३७० हटाने, तीन तलाक मिटाने एवं श्रीराम मन्दिर जैसे राष्ट्रीय अस्मिता के मुद्दों तक पर विरोध करने वाले तत्व आने वाले समय में इस अदृश्य जन आक्रोश को बढा-चढाकर वोटगत भट्टी पर ‘मोदी विरोध’ की खिचड़ी पकाने का प्रयास करें।”

आज भारत अपने मजबूत नेतृत्व एवं इच्छा शक्ति के चलते विश्व के सामने ‘कोरोना वायरस’ के विरुद्ध संगठित एवं एकजुट प्रयास युक्त मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आया है। ऐसे समय में पुलिस, प्रशासन और सरकार द्वारा उठाये गये सभी कदम राष्ट्र व समाज के लिए एकजुटता का संदेश व संकल्प को मजबूत करते हुए उपयोगी एवं प्रभावी दिखने चाहिये। यह वक्त विश्व मानव समुदाय के सामने भारत, भारतीय जनमानस, भारतीय कार्य प्रणाली एवं सम्पूर्ण ढाँचागत व्यवस्थाओं में सहजता व संतुलन तथा आपात परिस्थितियों के नियंत्रण में परिपक्वता सिद्ध करने का भी है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों को पूरी ईमानदारी से ‘कोरोना वाइरस’ पर विजय प्राप्ति की लड़ाई में दैनिक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति, अति महत्वपूर्ण सेवाओं के संचालन तथा कानून व व्यवस्था बनाये रखने की नीति व स्वरूप सम्बन्धित स्पष्ट दिशा-निर्देशों तथा समन्वय को लागू करना होगा। विशेषकर नियमों की अनुपालना सम्बन्धी दिशा-निर्देशों के अभाव में पूरे देश में समान रूप से पुलिस की उभरकर आई गुण्डा कार्यशैली पर रोक लगाना अति आवश्यक है। निश्चित ही बार-बार नियमों की अनदेखी एवं लापरवाही करने वालों पर कठोर दंडात्मक कार्यवाही होनी चाहिए परन्तु दंड के प्रावधान व तरीके सुसभ्य, कानून सम्मत और न्याय के मूल स्वभाव के अनुरूप होने भी उतने ही जरूरी है।

वर्तमान में पूरा विश्व समुदाय इंटरनेट के चलते सम्वाद एवं जानकारी की दृष्टि से हर समय सब कुछ देख रहा साथ बैठा परिवार बन चुका है। अतः आवश्यक है कि पूरे देश में पुलिस द्वारा खुल्लेआम जनमानस को गाँव-गाँव, शहर-शहर सड़कों व गलियों में दौड़ा-दौड़ाकर कर मारपीट के दृश्यों को तत्काल रोका जावे। सीमित रूप से ही सही परन्तु आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति तथा सभी जन सेवाओं का संचालन स्पष्ट दिशा-निर्देशों के साथ चलें। भारत कोरोना वाइरस से पुलिसिया लाठी के बल पर नहीं अपितु विवेक, समझ, संवाद, संयम, धैर्य और सेवा के मूल मन्त्र के साथ अनुशासित रूप से लड़ता नजर आना चाहिये।

भारत को “कोरोना वाइरस” जैसी आपात परिस्थितियों को प्रेम, एकता और समझपूर्वक निपटते हुए सुसभ्य नव भारत निर्माण के अवसर के रूप में लेना चाहिए। कोरोना वाइरस के विरुद्ध युद्ध में पुलिस अपनी गुंडाई कार्यशैली के स्थान पर संयमपूर्वक गाँधीगिरी से गाँव-गाँव व गली-गली दो-चार अच्छे उदहारण पेश करते हुए उच्चतम कठोरता की घोषणा करें तो अधिक प्रभावी होगा। विश्व समुदाय में भारतीय पुलिस की उभरती हुई लठमार, गुण्डाई, स्वच्छंद एवं उद्दंड छवि से देश के कानूनों के अरिपक्व व अमानवीय होने, गरीबी, भुखमरी, वस्तुओं के अभाव, कमजोर वितरण प्रणाली, चरमराई सेवा व्यवस्था, ढाँचागत विकास में विफलता आदि कहानियाँ बन रही है। ऐसे में दुनिया भारतीय संविधान, कानूनी प्रक्रिया और व्यवस्थाओं के संचालन व नियंत्रण में हमारी विफलताओं पर क्यों नहीं हँसेगी?

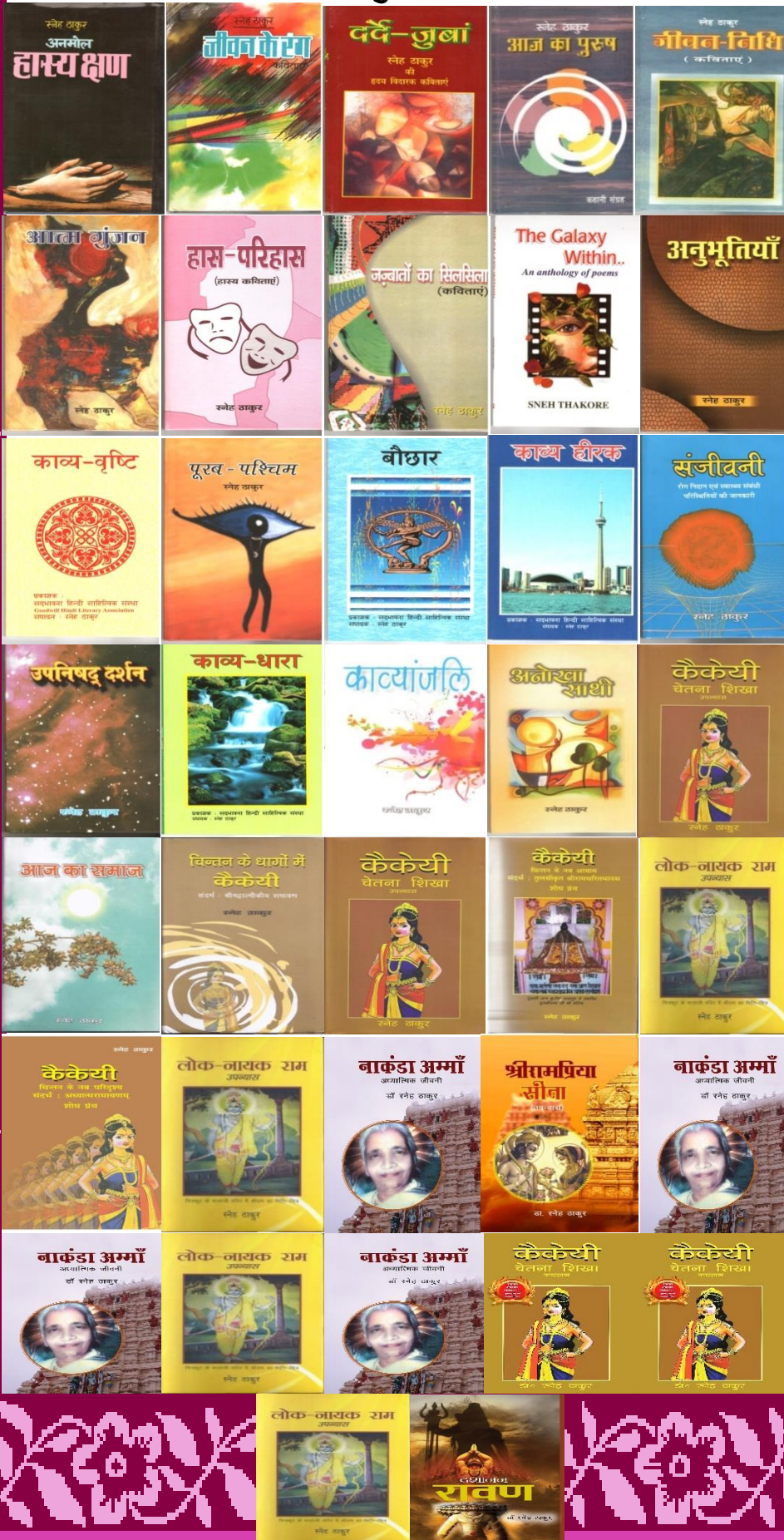
इस स्थिति में पुलिस व जनता में दूरियाँ भी बढ़ेंगी और कई प्रकार से स्थायी वैमनस्य की भावी स्थितियाँ बनेंगी। कई स्थानों पर आम लोगों द्वारा पुलिस को पीटने के समाचार इन चिंताओं को प्रमाणित कर रहे हैं। पुलिस के इस गुंडाई व्यवहार के चलते सुसभ्य लोगों द्वारा अतिआवश्यक चिकित्सा जैसे कार्यों के लिए भी बाहर नहीं निकलने से भारी जानमाल का नुकसान भी सम्भव है, जो समय बीतने के बाद ही ज्ञात हो सकेगा। अतः किसी भी कारण से कोई अकेला व्यक्ति हो, स्त्री व बच्चों के साथ हो, वृद्ध हो अथवा अकेली स्त्री हो आदि मामलों में बिना पूछ-ताछ के डण्डे बरसाने वाले पुलिस वालों पर कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। जनता को बाहर निकलने से रोकने के उपायों में डंडे की बजाय आर्थिक एवं शारीरिक सेवा कार्य का दंड रखे जाये तो अधिक कारगर हो सकते हैं। कोई बिना उचित कार्य घूमता मिले तो बड़ा आर्थिक दंड का चालान हो अथवा हिरासत में लेकर दो-चार दिन-सप्ताह भर का शारीरिक श्रम का दंड कार्यालयों में बागवानी, आइसोलेशन सेंटरों में सेवा, गौशालाओं में गोबर उठाने आदि कार्य करवाया जाये। यह कदम जनता के बाहर निकलने की प्रवृत्ति पर डंडे से कहीं अधिक प्रभावी नीति सम्भव होंगे।

सरकार को अतिआवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति के सरल उपायों पर जोर देना चाहिए। जैसे कि सांसद, विधायक, जिला प्रमुख, पंचायत समिति प्रधान, सरपंच, ग्राम पंच स्तर तक के जन प्रतिनिधियों को कानूनी रूप से अपने क्षेत्रों में रहकर जनता से सम्वाद का काम अनिवार्य रूप से सौंपा जाये। ऐसे संक्षिप्त आपात प्रशिक्षण हों कि वो भेदभाव रहित तथा वोटगत सोच से ऊपर केवल राष्ट्रसेवा के मापदंडों पर कार्य करें। जो प्रतिनिधि इस आपातकाल धर्म में गैर जिम्मेदार आचरण करें, उन पर कठोर संसदीय कार्यवाही हो। ग्राम पंचायत स्तर पर “आवश्यक सेवा निर्णय समितियों” का गठन हो ताकि आमजन की आवश्यकता के अनुसार समाधान की सरल अनुमति प्रक्रिया बन सके। इन कदमों से अनावश्यक सड़कों पर निकलने का बोझ कम होगा। ग्रामसेवक, पटवारी आदि पंचायती राज कर्मचारियों को अपने कार्य-स्थल पर रहने की अनिवार्यता कर गाँव व पंचायत स्तर पर नियंत्रण कक्ष की भाँति काम करने का आदेश हो। ग्राम पंचायत स्तर पर अस्पताल आदि के लिए टैक्सी, आवश्यक वस्तुओं के लिए करियाना दुकान और सब्जी-दूध-दवादि हेतु अनुमति पत्र जारी हों। इन कदमों में कोरोना वाइरस से लड़ने के मूल नियमों से कोई समझौता नहीं हो तथा भीड़ न होने देने एवं आपसी दूरी आदि नियम कठोरता से लागू रहें।

पुलिस द्वारा कानून की कठोर अनुपालना अवश्य हो परन्तु सभी कारगर व प्रभावी ढंग हेतु नियंत्रण उपायों में सभ्य समाज वाले महान भारत निर्माण का स्वप्न परिलक्षित होना भी उतना ही आवश्यक है। स्वतंत्र भारत में यह पहला अवसर है जब किसी प्रधानमंत्री की निष्ठा को देश की जनता और पूरा विश्व एक स्वर में भारत के पर्याय के रूप में देखने लगा है। अतः हमें ‘कोरोना वाइरस’ से कामयाब होती लड़ाई के बाद प्रधानमंत्री मोदी जैसे श्रेष्ठ एवं कुशल नेतृत्व को देश विरोधी तत्वों द्वारा असंवेदनशील या जनविरोधी बताने की सम्भावित किसी कुचेष्टा को रोकने के प्रति भी सजग रहना होगा। यही अवसर है जब भारत को पूरे विश्व के सामने अपनी समस्याओं से सहजता व एकजुटता से बाहर निकलने में समर्थ राष्ट्र के रूप में साबित करना है। हमें प्रभावी ढंग से कोरोना जैसी आपदाओं को प्रेम, सहकार, सद्भाव, एकता एवं राष्ट्रीय मजबूती के अवसर में बदलकर दिखाना होगा।



डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

दशानन रावण	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(उपन्यास)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, द्वितीय संस्करण)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमदवाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)	(सामाजिक लेख-संग्रह)
आज का समाज	(उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(कहानी-संग्रह)
अनोखा साथी	(काव्य-संग्रह)
काव्यांजलि	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-धारा	(दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
उपनिषद् दर्शन	(स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख)
संजीवनी	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य हीरक	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
बौछार	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
पूरब-पश्चिम	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-वृष्टि	(काव्य-संग्रह)
अनुभूतियाँ	(A collection of English poems)
The Galaxy Within	(काव्य-संग्रह)
जड़वातों का सिलसिला	(हास्य कविताएँ)
हास-परिहास	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
आत्म-गुंजन	(काव्य-संग्रह)
जीवन-निधि	(कहानी-संग्रह)
आज का पुरुष	(नज़्म व गज़ल संग्रह)
दर्द-जुबाँ	(काव्य-संग्रह)
जीवन के रंग	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेन्ट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)
अनमोल हास्य क्षण	

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंस (प्रा.) लि.
४५ बी., आसफ अली रोड
नई दिल्ली - ११०००२, भारत
Star Publishers' Distributors

55, Warren Street

LONDON – W1T 5NW, England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित